अघोरी तन्त्र



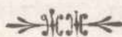



खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन बम्बई-४

श्रीगणेशाय नमः

अघोरी तंत्र

(सरल हिन्दी)



पं० गौरीशंकरजी शर्मा तंत्रशास्त्री रचित.

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन
बम्बई

संस्करण : जनवरी २००८, सम्वत् २०६४

मूल्य : २० रुपये मात्र।

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass Prop: Shri Venkateshwar Press, Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s.Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013

श्रीगणेशाय नमः

अनमिल अक्षर अर्थ न जापू । प्रगट प्रभाव महेश प्रतापू ।।

अघोरीतन्त्र

मंत्र विद्या



हिन्दुस्थानमें ऐसी २ विद्या भरी पडी हैं कि जिनको देखकर अंग्रेजही क्या बल्कि सारे संसारके लोग ताज्जुबमें आजाते हैं । उन विद्याओंमेंसे यहां पर मंत्रविद्याका जिकर किया जाता है । इस विद्याकी आजमायश हमने कई बार की है । अनेक मंत्र तन्त्रके वसीलेसे बहुतेरे अजायब काम होते देखे हैं । मंत्रके जरियेसे चोर पकडे गये हैं । मंत्र पढी हुई कुछ शै खानेसे चोरके बदनसे लहू बहा है । मंत्र पढे हुए लकडीके टुकडेने बराबर एक साथ उछलकर चोरको पकडा है । पानी, चावल, राख यह तीनों मंत्रसे पढे जाकर हरेक कामपर अपना जोर दिखाते हैं । हमने यहांतक देखा कि मंत्रके पढतेही सांपका जहर उतर गया । बस मंत्र-विद्याको झूँठा साबित करनेकी हिम्मत कोई भी नहीं कर सकता है । जिसके काम रोजमर्रा हम अपने आसपास देखते हैं, उसको किस तौरसे झूँठा कहें ? इस विद्याकी अन्दरूनी बातोंको न जानकर, इसके सबब और इसके वसीलेकी वाकिफ-कारी न होनेपर क्या कोई इस विद्याको झूँठ कहनेकी हिम्मत कर सकता है ? कभी नहीं । सच या झूठका साबित होना इम्तहान करनेपर मुनहसिर है । अगरचे पहले जमानेके मुआ-फिक आजकल इस इल्मका फैलाव बहुत कंम है, परंतु तो भी

बहुत थोडा नहीं है। पहले यह इल्म छिपा था, अब छिपाया नहीं छिपता। जब किताबोंमें इस इल्मका छपना शुरू हो गया तब तो हमारा यही ख्याल है कि शायद यह इल्म अब तरक्की पकड जाय। हम अपने नाजरीनोंसे उम्मेद करते हैं कि आपलोग जरूरही इसका इम्तहान करें। पेश्तर इस इल्मको बडीही खबरदारीके साथ छिपाकर रखते, यहां तक कि कोई किसी पर इसका भेद जाहिर न करता था, बाप बेटेको नहीं बतलाता और गुरु अपने प्यारेसे प्यारे चेलेको भी नहीं सिखलाता था। ऐसी हालतमें जहां तक हमको इस इल्मका हाल मालूम हुआ है वह सबही इस किताबमें लिखे देता हूं.

मंत्रविद्याका बतलाना सिखलाना या किसी किताबमें लिखना बडाही मुशकिल काम है। नहीं कह सकते हैं कि हमसे यह काम कहां तक पूरा हुआ है? तो भी जहां तक मेहनत और कोशिश करनी चाहिये वहां तक कोशिश करके यह इल्म आपके रोबरू पेश करते हैं, अब इम्तहान करना आपका काम है। जो बातें आगे लिखी जायँगी उनका सूची-पत्र नीचे लिखा जाता है।

भौतिक विद्या, शक्तिसाधना, प्रेत साधना, अजायब कामोंका करना, अनिष्टका दूर करना, यौगिक विद्या, धनका बढाना, गिनती, रोगका दूर करना, वशीकरणादिक।

इस वक्त विलायतमें इस तरहके अजायब इल्म बक-सरत फैल रहे हैं, हम यहां पर उनका हालभी लिखेंगे, इसके लिखनेसे नाजरीन दोनों जगहके इल्मोंका मुकाबिला कर देखेंगे, यहां पर कह देनेकी यह भी जरूरत है, विलायतमें

ऐसी बहुतसी किताबें छपगई हैं, कि जिनमें इस इल्मका हाल बहुतायतसे लिखा गया है, लेकिन अफसोसका मुकाम है कि हमारे मुल्कमें मुनासिब किताबें इस इल्मकी नहीं छपीं; और जो दो चार छपी भी हैं वह सीखनेके लिये काफी नहीं हैं।

हिन्दुस्थानमें जिस तरह इस अजीबो गरीब इल्मका फैलाव हो रहा है, विलायतमें भी एक वक्त ऐसाही फैलाव था, अब भी है; लेकिन कुछ बातें आईनके बरखिलाफ होनेसे दूर हुई जाती हैं, परंतु एक तरफ कुछ लटके नेस्तोनाबूद हो रहे हैं, और दूसरी तरफ कुछ अजायब लटकोंकी तरक्की हो रही है। हमने अच्छी तरहसे उनका जिकर किया है। इनके पढने और हिन्दुस्थानी इल्मके देखनेसे पढनेवालेजान लेंगे कि इन दोनोंके बीचमें कोई खास फरक नहीं; बल्कि दोनोंकी असलियत एक है,तो भी हम पेश्तर कह आये हैं कि हिन्दुस्थानी कुल इल्मोंके साथ, सिर्फ इल्महीके साथ क्यों कुल कामोंके साथ जिस तरह धर्मका मेल है, वैसेही इस मंत्रविद्याकी नीव भी धर्मके ऊपर रक्खी गई है, अंगरेजी यंत्रमंत्रमें ऐसा नहीं है, बस इससे ज्यादा कोई फरक दिखलाई नहीं देता।

इस किताबमें इस तरहसे मंत्रविद्याका जिकर किया गया है, कि जरा २ से लडकी लडके इस इल्मको सीख लेंगे। सिर्फ सीखनाही नहीं, बल्कि वह इसके वसीलेसे अजीब २ करतब कर दिखावेंगे।

इस विद्याके लिखनेमें हमको बहुतसी किताबोंको देखनेके सिवाय मेहनत भी बहुतही पडी है। अगर इसके पढनेसे पढनेवालोंको कुछ भी फायदा पहुँच सके तो मैं अपनेको कामियाब हुआ समझूं।

एक प्रार्थना और है; कि आजकल किसी बातका इम्तहान बहुत कम किया जाता है, लेकिन हमारे नाज-रीन जरूर ही इस इल्मका पूरा इम्तहान करें! अगर कमसे कम दश आदमी भी करें तो हमको कमाल खुशी हासिल होगी, इसके सिवाय जो एक आदमी भी कामियाब होकर इस इल्मके जरिये से अजीब २ काम करनेकी ताकत पाजावै, तो भी हम वाकअमें अपनी मेहनतका समरा वसूल हुआ समझेंगे।

अथ तांत्रिक शिष्यके लक्षण

अर्थात्-लोभहीन, स्थिरगात्र, आज्ञाकारी, जितेन्द्रिय, ईश्वरमें दृढभक्ति रखनेवाला, गुरुमंत्रमें परमभक्ति युक्त इत्यादि गुण न रहनेसे कभी कोई शिष्य होकर तांत्रिकधर्ममें दीक्षित नहीं हो सकता, कोई २ इतना तो साफ २ ही समझमें आता है कि तंत्रशास्त्रमें जिन बातोंका वर्णन है उनको पढकर स्वभावसेही मनुष्यके मनमें यह बात पैदा होती है कि तांत्रिक लोग जानवरके मुआफिक हैं। असलमें तांत्रिक लोग ऐसे नहीं हैं। क्योंकि प्रथमही तांत्रिकधर्ममें दीक्षित होनेके लिये जिन गुणोंकी आवश्यकता है, वह गुण जितेन्द्रिय और सर्वगुण-वान् पुरुषमें होते हैं, दूसरेमें नहीं। बस इसलिये विनाछानबीन किये तांत्रिकधर्मको पापमय कहना मुनासिब नहीं है।

तंत्रशास्त्रकी खास मनसा मनुष्यकी मुक्तिका होना है तो भी इसमें इस काल परकाल दोनों कालका सुख एकही समय मिल जाता है। तांत्रिकधर्ममें मुक्ति तो है ही, इसके सिवाय मनुष्यको तरह २ की ताकतें पैदा हो जाती हैं, यहां-

पर मुक्तिका जिकर करना इस किताबका मतलब नहीं है। यहां पर चन्द मंत्र वह लिखे जाते हैं जिनसे आदमीको अनेक प्रकारकी अद्भुत सामर्थ्य उत्पन्न होती है। परंतु यह कहना जरूरी है कि पहले २ तांत्रिकधर्मको ग्रहण कर फिर सिद्धि प्राप्ति करनेकी कोशिश करे। इसके लिये दो बातें जरूर हैं। अव्वल ध्यान, दोयम जप।

ध्यान

मनही मनमें किसी बातका विचारनाही ध्यान है। कोई देवीकी मूर्ति सामने रखकर उसकोही हृदयमें, धारण करके ध्यान करते हैं। कोई २ मूर्त्तिकी कुछ जरूरत न समझ-कर, पुराणोंमें व तंत्रोंमे देवीजीकी जिन मूर्त्तियोंकी जिकर की गयी है, उनमेंसे किसी एकको ले मनही मनमें कल्पनाकी सहायतासे उस मूर्त्तिका ध्यान करते हैं। वास्तवमें तांत्रिक-लोग प्रतिमापूजा नहीं करते, न वह इसके तरफदार हैं, जो वाकअमें सिद्ध आदमी हैं वह मूर्त्तिसे नफरत नहीं करते, मूर्तिको देखकर भक्ति करते, पूजा करते और शिर नवाते तो भी सर्वसाधारण विनाही प्रतिमाके माताकी पूजा किया करते हैं, इससे साबित हुआ कि प्रतिमा गृहस्थोंके लिये है और विना प्रतिमाकी पूजा विरागी व संन्यासियोंके लिये है। हम पहलेही कह आये हैं, कि भक्तजन पृथक् २ रीतिसे माताकी पूजा किया करते हैं, अतएव इनकी पूजापद्धति भी अलग २ तौरसे है, पुजापद्धतिका वृत्तान्त आगे लिखा जायगा।

जप

केवल ध्यानसेही सिद्धि नहीं मिलती, ध्यानके सङ्गमें

तांत्रिकलोग और एक बात कह आये हैं कि जिसका नाम जप है। किसी मुकर्रिर मंत्रके बार २ नाम लेनेका नाम जप है। हरेक कामकी सिद्धके लिये थोडा बहुत जप करना पडता है, किसी मंत्रका जप दो लाख होता है, वरन कोई मंत्र करोड बार जपा जाता है। पूजा, ध्यानका अर्थ कुछ समझमें आ भी जाता है परंतु मंत्रका कोई अर्थ समझमें नहीं आता। जिन मंत्रोंका "बीजमंत्र" नाम है, उनके अर्थ समझनेका कोई भी उपाय नहीं। कुछ बीजमंत्र नीचे लिखे जाते हैं।

बीजमंत्र–ओंकारही आदि बीज,ओंकारही ब्रह्मस्वरूप है।

अजपागायत्रीमंत्रः–हंसः। हृदि परमहंसदेवतायै नमः। लिंगे हं बीजाय नमः। आधारे सं शक्तये नमः।

भुवनेश्वरीमंत्रः – ह्रीं। (हकार नकुलीश, रेफ, अग्नि, ईकार वामनेत्र)

दक्षिणकालिकामंत्रः – क्रीं क्रीं क्रीं हुं हुं ह्रीं ह्रीं दक्षिण-कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हुं हुं ह्रीं ह्रीं स्वाहा। (क जलरूपी, रेफ अग्नि, बिन्दु ब्रह्म)

श्यामायाः –क्रीं क्रीं क्रीं हूं हू ह्रीं ह्रीं दक्षिणकालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं स्वाहा।

गुह्यकालिकायाः – क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं गुह्यका-लिक क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।

भद्रकाल्याः –क्लीं क्लीं क्लीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं भद्रकाल्यै क्लीं क्लीं क्लीं हूं हूं ह्रीं ह्लीं स्वाहा। ह्रौं कालि महाकालि किलि किलि फट् स्वाहा।

श्मशानकालिकायाः–क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं श्मशा-

नकालि क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा। अथवा ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं कालिके ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं।

महाकाल्याः – क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं महाकाली क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा ओं फ्रें फ्रें क्रों पशून् गृहाण हुं फट् स्वाहा।

तारायाः–ह्रीं श्रीं हुं ऐं वज्रवैरोचनीये हुं हुं फट् स्वाहा।

भुवनेश्वर्य्याः–सबसे पहले कह आये हैं।

श्मशानभैरव्याः–श्मशानभैरवी नवरुधिरास्थिवसाभक्षणि सिद्धिं मे देहि मम मनोरथान् पूरय हुँ फट् स्वाहा।

सम्पन्नप्रदाभैरव्याः–सहयें हस कलरीं हसरौं।

कैलेशभैरव्याः–सहरैं सहकलरीं सहरों।

भयविध्वंसिनीभैरव्याः–हसें हसकलरीं हसौं।

सकलसिद्धिदाभैरव्याः–सहेंसहकलह्रीं सहौं।

चैतन्यभैरव्याः–सहैं सहकलह्रीं सहरौं

कामेश्वरीभैरव्याः। सहें सहकलह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे सहरौं।

बटुकभैरव्याः–डरलक सहैं डरलक सहिं डरलक सहौं

नित्यभैरव्याः –हसकलरडें हसकलरडीं हसकलरडौं।

रुद्रभैरव्याः – हसैं हसकलह्रीं हसौं।

भुवनेश्वरीभैरव्याः–हसैं हसकलह्रीं हसौं।

अन्नपूर्णाभैरव्याः–ओं ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति महेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा।

सकलैश्वर्य्याः–सहैं सकलह्रीं सहौं

त्रिपुरबालायाः। ऐं क्लीं सौं।

नवकूटाबालाया: । ऐं क्लीं सौं । हसैं हसकलरीं हसों हसरैं हसकलरीं हसरौं ।

छिन्नमस्ताया:–श्रीं क्लीं हूं ऐं वज्ररोचनीये हूं हूं फट् स्वाहा ।

धूमावत्या:–धूं धूं स्वाहा ।

मातङ्गिन्या:–ॐ ह्रीं क्लीं हूं मातंग्यै फट् स्वाहा ।

बगलाया: वा बगलामुख्या:–ॐ ह्रीं बगलामुखि सर्व-दुष्टानां वाचमुखं स्तम्भय जिह्वां कालय बुद्धिं नाशय ह्रीं ॐ स्वाहा ।

महालक्ष्म्या–ॐ ऐं ह्रीं क्लीं हसौं क्लीं हसौं जगत्प्रसूत्यै नम:

त्रिपुटाया:–श्रीं ह्रीं क्लीं ।

त्वरिताया:–ॐ ह्रीं हुं खेच्छे क्षस्त्री हुं क्षे ह्रीं फट् ।

नित्याया:–ऐं क्लीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा ।

वज्रप्रस्तारिणीमंत्र–ऐं ह्रीं नित्याक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा ।

दुर्गाया:–ॐ ह्रीं दुं दुर्गायैं नम: ।

महिषमर्द्दिन्या:–ॐ महिषमर्द्दिनी स्वाहा ।

जयदुर्गाया:–ॐ दुर्गे दुर्गे रक्षणि स्वाहा ।

शूलिन्या:–जल जल शूलिनि दुष्टग्रह हुं फट् स्वाहा ।

वागीश्वर्या:–वद वद वाग्वादिनी स्वाहा ।

पारिजातसरस्वत्या:–ॐ ह्रीं हसौं ॐ ह्रीं सरस्वत्यै नम: ।

सारस्वतबीजं–ऐं ।

नीलसरस्वत्या:–ओं ह्रीं स्त्रीं हुं फट् ।

कात्यायन्या:–ऐं ह्रीं श्रीं चौं चण्डिकायै नम: ।

गौर्याः–ह्रीं गौरी रुद्रदयिते योगेश्वरि हुं फट् स्वाहा ।

विशालाक्ष्याः–ओं ह्रीं विशालाक्ष्यै नमः ।

गणेशबीजं–गं ।

हेरम्बबीजं–ओं गूं नमः ।

हरिद्रागणेशबीजं–ग्लं ।

महागणेशबीजं–ओं श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा ।

सूर्यबीजं–ओं घृणि सूर्य आदित्य ।

श्रीरामबीजं–रां रामाय नमः जानकीवल्लभाय हुँ स्वाहा ।

विष्णुबीजं–ओं नमो नारायणाय ।

श्रीकृष्णबीजं–गोपीजनवल्लभाय स्वाहा ।

वासुदेवस्य–ओं नमो भगवते वासुदेवाय ।

बालगोपालस्य–ओं क्लीं कृष्णाय ।

लक्ष्मीवासुदेवस्य–ओं ह्लीं ह्लीं श्रीं लक्ष्मीवासुदेवाय नमः ।

दधिवामनस्य–ओं नमो विष्णवे सुरपतये महाबलाय स्वाहा ।

हयग्रीवस्य–ओं उद्गीरत् प्रणवोद्गीथसर्वयोगीश्वरे-श्वरासर्ववेदमयाचिन्त्यसर्व बोधय बोधय ।

नृसिंहस्य–उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतो मुखम् । नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युमृत्यु नमाम्यहम् ।

नरहरिबीजं–आं ह्लीं क्षौं हुं फट् स्वाहा ।

हरिहरस्य–ओं ह्लीं हौं शंकरनारायणाय नमः हौं ह्लीं ओं ।

वराहस्य–ओं नमो भगवते वराहरूपाय भूर्भुवस्व:पतये भूपतित्वं मे देहि दापय स्वाहा ।

शिवस्य–हौं । पूजामंत्र:–ह्रीं ओं नम: शिवाय ह्रीं ।

मृत्युञ्जयस्य – ओं जुं स: ।

दक्षिणमूर्तिबीजं–ओं नमो भगवत्यै दक्षिणामूर्त्तये महा-मेधां प्रयच्छ स्वाहा ।

चिन्तामणिबीजं–र क्ष म र ब औं ऊं ।

नीलकण्ठस्य–ओं मीं ठ : नम: शिवाय ।

चण्डस्य–रुध्व फट् ।

क्षेत्रपालस्य–ओं ह्रीं बटुकाय आपदुद्धरणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं ।

तारिण्या:–क्रीं क्लीं कृष्णदेवि ह्रीं क्रीं ऐं ।

ब्रह्मश्रीमंत्र – ह्रीं नमो ब्रह्मश्रीराजिते राजपूजिते जये विजये गौरि गन्धारि त्रिभुवनशङ्करि सर्वलोकवशङ्करि सर्वस्त्रीपुरुषवशङ्करि सुषुद्धदुर्योरवावे ह्रीं स्वाहा ।

वीरसाधनस्य–हूं पवननन्दनाय ।

इन्द्रस्य–इं इन्द्राय नम: स्वाहा ।

हनुम्‌बीजं–हं हनुमते रुद्रात्मकाय हुं फट् ।

गरुडस्य–क्षिप ओं स्वाहा ।

ऊपर लिखे हुए सारे मंत्रोंकी जपके लिये आवश्यकता होती है ।

जिस देवताका ध्यान करनेमें जिस बीजमंत्रकाजप करना चाहिये, उसी मंत्रके धोरे उस देवताका नाम हम लिखा है ।

मंत्रका उच्चारण जाननेके सिवाय वर्णज्ञानका जान लेना भी जरूर है अर्थात् यह जानलेना कि कौन मंत्र किस तरहसे उच्चारण करना उचित है। अलग २ शब्दोंका अलग अलग उच्चारण, करनेसे अर्थ भी अलग २ होता है। अगर हँसी दिल्लगीमें किसीको बदमाश कहा जाय तो वह बुरा न मानेगा; परंतु यही "बदमाश" शब्द जो हम गुस्सेमें भरकर कहें तो सुननेवाला तत्काल क्रोधित होजायगा। बस इसमें कोई संदेह नहीं कि उच्चारण करने में भी बहुतायतसे शब्दका मतलब बदल जाता है। "लं फट्" एक मंत्र है. इसका असली उच्चारण विना जाने हुए इस मंत्रका देवता कभी प्रसन्न नहीं होता। वरन दूसरे प्रकारके उच्चारणसे देवता कभी २ अप्रसन्न हो जाता है। पस मंत्रका उच्चारण सही २ जान लेना सबसे अव्वल काम है। लेकिन अफसोसकामुकाम है कि किसी तंत्रमें इन मत्रोंका उच्चारण नहीं लिखा है। कोई उपाय नहीं। उच्चारण करनेकी कोई भाषा न तब थी न अब है। जिस प्रकार गाना बिना सुने हुए नहीं आता, ऐसेही इन मंत्रोंका उच्चारण बिना सुने हुए किसी प्रकार नहीं आसकता। इस सबबसे तांत्रिकधर्म ग्रहण करनेसे पहले उसको तलाश करना चाहिये। लेकिन इन मंत्रोंका उच्चारण करते २ खुदबखुद भी सही २ उच्चारण होने लगता है यह कहने में कोई हर्ज नहीं कि इन मंत्रोंका जप करनेसे किसी न किसी प्रकार कार्य होता है। हमने पेश्तरही कहा है कि ध्यान और जप पूजाके प्रधान अंग हैं, कालीदेवीजीकी पूजा हुआ करती है प्रायः तांत्रिक पूजा वैसेही हुआ करती है, तो भी

सिद्धि प्राप्त करनेके लिये अनेक भांतिकी पूजा तंत्रोंमें लिखी हुई है।

इनमें श्मशानपूजा, शवसाधना, भैरवी चक्रादि प्रधान हैं. मातृभाव स्त्रीभाव, सखीभावादिके लिये पूजाकी विधिभी अलग २ है। जिस प्रकार मृतक शरीरसे सिद्धि प्राप्त होती है, वैसेही कुलस्त्री (अर्थात् जो कोई स्त्री भी हो) को लेकर-भी साधना होती है। यह तांत्रिकधर्मकी बातें विशेष जानने योग्य हैं, परंतु हमारी पुस्तकमें सबका बयान होना मुमकिन नहीं, क्योंकि सागरमें पानी घना गागरमें न समाय। परंतु खास २ सिद्धिके लिये काली पूजा और ध्यान व जप इन तीन कामोंके करनेसे भी सिद्धि हो जायगी। ध्यान और जपके लिये मनको स्थिर करनेके अर्थ निर्जन स्थानमें बैठनेका प्रयोजन है। शक्तिके रूप अलग २ हैं। नीचे कुछ ध्यान लिखे जाते हैं।

कालीध्यानम्

शवारूढां महाभीमां घोरदंष्ट्रां हसन्मुखीम्।
चतुर्भुजां खड्गमुण्डवराभयकरां शिवाम्॥
मुण्डमालाधरां देवीं लोलजिह्वां दिगम्बराम्।
एवं सञ्चिन्तयेत्कालीं श्मशानालयवासिनीम्॥

ताराध्यानम्

प्रत्यालीढपदार्पितांघ्रिशवहृद्घोराट्टहासापरा।
खड्गेंदीवरकर्त्रिखर्परभुजा हुंकारबीजोद्भवा॥
खर्वानीलविशालपिङ्गलजटाजूटैकनागैर्युता।
जाड्यं चन्द्रकपालकर्तृजगतां हन्त्युग्रतारा स्वयम्॥

षोडशीध्यानम्

बालार्कमण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम् ।
पाशांकुशशरांश्चापं धारयन्तीं शिवां भजे ।।

भुवनेश्वरीध्यानम् ।

उद्यद्दिनद्युतिमिन्दुकिरीटां तुंगकुचां नयनत्रययुक्ताम् ।
स्मेरमुखीं वरदांकुशपाशभीतिकरां प्रथये भुवनेशीम् ।।

भैरवीध्यानम्

उद्यद्भानुसहस्रकान्तिमरुणक्षौमां शिरोमालिकाम् ।
रक्तालिप्तपयोधरा जपपटीं विद्यामभीतिं वराम् ।।
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्रविलसद्रक्तारविन्दश्रियम् ।
देवीं बद्धहिमांशुरत्नमुकुटां वन्दे सुमन्दस्मिताम् ।।

छिन्नमस्ताध्यानम्

प्रत्यालीढपदां सदैव दधतीं छिन्नं शिरः कर्त्रिकाम् ।
दिग्वस्त्रां स्वकबन्धशोणितसुधाधारां पिबन्ती मुदा ।।
नागाबद्धशिरोमणिं त्रिनयनां हृद्युत्पलालंकृताम् ।
रत्यासक्तमनोभवोपरि दृढां ध्यायेज्जवासन्निभाम् ।।
दक्षे चातिसिता विमुक्तचिकुरा कर्त्रि तथा खर्परं ।
हस्ताभ्यां दधती रजोगुणभवा नाम्नापि सा वर्णिनी ।।
देव्याच्छिन्नकबन्धतः पतदसृग्धारां पिबन्तो मुदा ।
नागाबद्धशिरोमणिर्मनुविदा धेया सदा सा सुरैः ।।
बामे कृष्णतनुं तथैव दधती खड्गं तथा खप्परं ।
प्रत्यालीढपदां कबन्धविगलद्रक्तं पिबन्ती मुदा ।।
सैषा या प्रलये समस्तभुवनं भोक्तुं क्षमा तामसी ।
शक्तिःसापि परात्परा भगवती नाम्ना परा डाकिनी ।।

धूमावतीध्यानम्

विवर्णा चचञ्ला दुष्टा दीर्घा च मलिनाम्बरा ।
विमुक्तकुन्तला रूक्षा विधवा विरलद्विजा ।।
काकध्वजरथारूढा विलम्बितपयोधरा ।
शूर्पहस्तातिरूक्षाक्षा धूतहस्ता वरान्विता ।।
प्रवृद्धघोणा तु भृंशं कुटिला कुटिलेक्षणा ।
क्षुत्पिपासार्द्दिता नित्यं भयदा कलहास्पदा ।।
जपेत्कृष्णचतुर्दश्यां पुरश्चरणसिद्धये ।।

बगलामुखीध्यानम् ।।

मध्येसुधाब्धिमणिमण्डपरत्नवेदींसिंहासनोपरिगतां परिपीतवर्णाम् । पीताम्बराभरणमालविभूषिताङ्गीं देवीं नमामि धृतमुद्गरवैरिजिह्वाम् ।। जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं वामेन शत्रून् परपीडयन्तीम् । गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्या द्विभुजां नमामि ।।

मातंगीध्यानम् ।

श्यामाङ्गीं शशिशेखरां त्रिनयनां रत्नसिंहासनस्थिताम् ।
वेदैर्बाहुदण्डैरसिखेटकपाशाङ्कुशधराम् ।।

कमलाध्यानम्

कान्त्या काञ्चनसन्निभां हिमगिरिप्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैः ।
हस्तोत्क्षिप्तहिरण्मयामृतघटैरासिच्यमानांश्रियम् ।।
बिभ्राणां वरमब्जयुग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्वलाम् ।
क्षौमाबद्धनितम्बबिम्बललितां वन्देऽरविन्दस्थिताम् ।।

बस ऊपर लिखे हुए इन्हीं ध्यानोंसे काम चला जाता है । हरेक देवीका ध्यान हम लिख आये हैं, परंतु जहां पर कोई

भी ध्यान नहीं लिखा है वहां पर कोईसा ध्यान करले उसीसे काम चल जायगा।

द्रव्यसम्बन्धीमंत्र

पूजा, ध्यान और जपसे जो कुछ काम पडता है वह संक्षेप और सरल भाषासे वर्णन किया गया। परंतु मंत्र-विद्याके वास्ते और भी कुछ नियम हैं, जिनको बिना जाने और बिना व्यवहार किये कार्य सिद्ध नहीं हो सकता।

मंत्रविद्याका प्रधान अंग द्रव्य गुणभी है। द्रव्यगुणके नियमोंका पालन करनेमें यह समस्त कार्य सिद्ध नहीं, होते। समस्त तंत्रशास्त्र यही लिखते हैं। बस जब इननियमोंका पालन करनेमें कोई तकलीफ नहीं है और हरेक अपनी मरजीके मुआ-फिक इनको वरतावमें लासकता है, तब अति आवश्यकता है कि मंत्रविद्याका प्राप्त करनेवाला इन नियमोंका पालन करे।

हमारे नाजरीन देखेंगे कि अनेक कामोंमें वृक्षकी जड पत्ते और छालादि लेनेके समय एक मंत्र पढकर इनका लेना उचित है वह मंत्र नीचे लिखा है।

औषधिके लिये वृक्ष उखाडनेके समय यह मंत्र पढकर प्रणाम करना चाहिये।

ॐ वेतालाश्च पिशाचाश्च राक्षसाश्च सरीसृपाः।
अपसर्पन्तु ते सर्वे वृक्षादस्माच्छिवाज्ञया॥
ॐ नमस्तेऽमृतसम्भूते बलवीर्यविवर्द्धिनि।
बलमायुश्च मे देहि पापान्मे त्राहि दूरतः॥
उसके बाद यह मंत्र पढकर पेडकी जडको खोदे।
येन त्वां खनते ब्रह्मा येन त्वां खनते भृगुः।

येन इन्द्रोऽथ वरुणो येन त्वामुपचक्रमे ।।
तेनाहं खनयिष्यामि मंत्रपूतेन पाणिना ।
मा ते पाते मा निपाते मा ते तेजोऽन्यथा भवेत् ।।
अत्रैव तिष्ठ कल्याणि मम कार्यं करी भव ।।

उसके पीछे "ॐ ह्रीं क्ष्रौं फट् स्वाहा" कहकर जडको उखाडले। काम सिद्ध करनेमें मशगूल होनेमें पहले "ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ऐं लं ॐ नौं स्वाहा" यह मंत्र एक लाख दफे जपना चाहिये।

इस मंत्रको पढकर वृक्षका उखाडना कुछ कठिन कार्य नहीं है, इसको सब कोई आसानीके साथ कर सक्ते हैं। आज कल नई तालीम और नई रोशनीके जमानेमें जरूर कुछ नवयुवक इन मंत्रोंको पढकर हसेंगे और कहेंगे "कि वृक्षकी जड पत्ते या छालमें जो गुण है, वह दरख्तमें हमेशाही रहता है किसी तरह आता जाता नहीं। यह तो मूर्ख और अज्ञानियोंकी समझ है कि विना मंत्र पढे वृक्ष उखाडनेसे कोई फल न होगा।" यह बात हम भी जानते हैं परंतु इतना तो अपनी आखोंमें देखा है कि चुटकी बजानेमें किसी किसी पेडके पत्ते नाचने लगते हैं। यह नहीं जाना जाता कि स्वभावसेही उस वृक्षमें यह गुण है या यह चुटकी देनेकी करामात है। जब हमको नहीं मालूम है कि "ह्रीं" कहनेसे किस पेड़में कौन कौन गुण वर्तता है तब एक वारही हम "ह्रीं" कहनेको बेवकूफी या ढकोसला नहीं कह सकते। जब तक इनका कोई अर्थ प्रकाशित नहीं होता है तब तक हमको बराबर अपने पूर्वजोंके बताये हुए मार्गपर चलना चाहिये।

विद्या प्राप्त होनेसे फल

इसमें कोई सन्देह नहीं कि इन विद्याओंके प्राप्त कर लेनेसे जगत्में अद्‌भुत कार्य करनेकी सामर्थ्य हो जाती है हमारी इस किताबके पढनेसे आप लोगोंको मालूम हो जायगा कि मनुष्यको मायासे मोहकर कैसे अजीब काम करा लिये जा सक्ते हैं। पहले जमानेमें हिन्दोस्थानके बीच इस इल्मका फैलाव बहुतही बढा हुआ था, इसमें बहुतसे सबूत पाये जाते हें। इसमें कोई सन्देह नहीं कि इस विद्याके बलसे मारीचने मायामृग बनकर रामलक्ष्मणको लुभाया था। इसी विद्याके बलसे रावणने श्रीरामचन्द्रजीको मायाकी सीता दिखाई थी। इसी विद्याके बलसे इन्द्रजीत नजरसे गायब रहकर श्रीरामचंद्रजीसे लडा था। उस जमानेके बाद राजा भोज इस विद्यामें महापंडित हुए थे। राजा भोजकी बेटी भानुमती भी इस विद्यामें अनुपम हुई थी। भानुमतीकी समान इन्द्रजालिक विद्याको जाननेवाला कोई स्त्री पुरुष हिन्दोस्थानकी तवारीखमें नजर नहीं आता। आजकल इस विद्याका प्रचार विलायतमें भी भली भांति हो रहा है फिर किस कारण से यह विद्या जगत्से मिथ्या प्रमाणित न होकर भी लोप हो जायगी यह हम नहीं समझ सक्ते। जिसके कार्य हम इतिहासमें देखते हैं जिसका वर्णन हम धर्मशास्त्रमें पढ़ते हैं। जिस विद्याकी बडी २ पुस्तकें अब तक वर्तमान हैं वह विद्या विना कारणही मिथ्या गिनी जाकर देशसे किस वास्ते निकाली जाती है।

सब साधारण इस विद्याका भली भांति विचार कर सकें इसी कारणसे सहज भाषा और सहज कायदोंके साथ

साथ इस किताबमें लिखी गई है। अफसोसकी बात है कि हरएक कामका इम्तहान करनेको हमें वक्त नहीं मिला, लेकिन जो बातें इस पुस्तकमें लिखी गई हैं उनका इम्तहान बहुत सहजमें हो सक्ता है। हम उम्मेद करते हैं कि पाठकपाठिका-गण इन अजीब कामोंका इम्तहान कर सच्चे झूंठेको जांचें। और जिसकी सच्चाई साबित हो उसको जाहिर करके दुनियां का भला करें।

कुछ मंत्र यहां पर झाडने फूकनेके लिखे जाते हैं, जिनसे अनायास मनुष्य बडे २ रोगोंसे छुटकारा पा सक्ता है। इन छोटे २ मंत्रोंके रहस्यको हम नहीं जानते, वैज्ञानिक लोगोंको भी अबतक इसका पता नहीं लगा। पर हम नहीं कह सक्ते कि इनका विश्वास करें या अविश्वास, इन मंत्रोंके पढनेसे हँसी आती है, परंतु अविश्वास नहीं होता कि यह बिलकुल गलत है। जब देखते हैं कि सत्य सत्यही इन मंत्रोंके जोरसे रोगी निरोग्यता हासिल करते हैं, अनेक अद्‌भुत कार्य इनके वसीलेसे होते हैं, तब कैसे दिल्लगीमें इनको उडा दिया जाय। इन मंत्रोंके झूंठ सच्च जाननेकी परीक्षा लेनेमें एक बाधा और भी है कि यह विद्या निरे अशिक्षित, अज्ञानी और नीच जातियोंमें फैली हुई है। वही इसके ओझा और सयाने हैं। ब्राह्मण कायस्थादि ऊंची जातियोंने न इसको कभी सीखा न पुस्तकोंमें लिखा (इन मंत्रोंके साथ जो रहस्य) गाथा है वह आज तक पुस्तकमें नहीं लिखी गई है। जो लोग "सयाने" हैं वह अति यत्नके साथ इन मंत्रोंके रहस्यको छिपाते हैं। इस कारण इन मंत्रोंके असली मतलबको

अब तक कोई न समझ सका। यह मंत्र भी इसी तरह छिपाये जाते तो भी समयके हेर फेरसे कुछ मंत्रोंका प्रचार हो ही गया, बरन तंत्रोंमें भी थोडेसे लिखे गये हैं। परंतु मंत्रोंके उच्चारण करनेही से काम होगा या नहीं, अथवा मंत्रोंके सिवाय और कुछ भी है या नहीं, यह बात अब तक कोई नहीं जान सक्ता। जो लोग जानते भी हैं वह लोग प्राणान्त होने परभी प्रकाशित करना नहीं चाहते और यह भी उम्मेद नहीं कि कभी वह लोग इसको प्रकाशित करें।

हमने बहुतसे मंत्र संग्रह करके इस स्थानमें लिखे हैं पढनेवाले परीक्षा करके इन मंत्रोंके झूंठकी परीक्षा कर सक्ते हैं। इनकी भाषाको देखतेही सब कोई साफ २ समझ जायँगे कि यह मंत्र असभ्यजाती अथवा नीच लोगोंके बनाये हुए हैं। क्योंकि प्रत्येक मंत्र उनकी भाषामें लिखा गया है। बंगालेका जादू मशहूर है, इस कारण ज्यादातर बंगालेकेही मंत्र यहां लिखेंगे।

सब मंत्र तीन हिस्सेमें तकसीम किये जाते हैं। प्रथम रोगशांति, दूसरे अनिष्टशांति, तीसरे अपदेवताशांति। पहले तो वह मंत्र लिखे जायेंगे जो कि रोगशांति के लिये हमने संग्रह किये हैं। तो भी इन मंत्रोंको प्राप्त कर सयानपन पाय प्राणोंके डरसे सदाही शंकित रहना पडता है। प्रति मुहूर्तपर ओझाके लिये विपद्का सामना करना पडता है, वरन जीवन तक संकटमें आपडता है। ओझा या सयाना होनेके पहले अपनी रक्षाके मंत्र भली भांति सीख लेने उचित हैं, वरन रक्षाके सैकडों मंत्र सीखे जायेंगे तो और भी अच्छा

हो। अलग २ कार्यके लिये रक्षाके मंत्र भी अलग २ हैं। हमने जो रक्षाके मंत्र इकट्ठे किये हैं वह नीचे लिखते हैं।

(क) चिह्नित मंत्र तीन वार पढ़कर तीन वार छाती पर फूंक मारनेसे ओझाको किसी बातका डर नहीं रहता।

"कोथाइं चलिये जाइं करिये पयान। आपनि सारिये जाइ हइये सामधान। पिट २ पद सारि, आर साहिमुख। नाककानकोच सारि आर सारि वूक। सर्वाङ्ग सारिये जाई मा मनसार वरे। लक्ष २ बाणे आमार किकरित्ते पारे। आकोड़दृष्ठेनिष्ठेरघा तव स्मरणेघा नेई फोटे अमुकेर गाय, साजा आसिहाजार पीरपयगम्बर कि तूले दिनु अमुकेर गाये अमुकेर वसे। करवे कामरूपे कामिक्ष्ये हाडिर झिचडिकालिका मा।"

यह आत्मरक्षाका साधारण मंत्र है। सर्पके भयको दूर करना, दूसरे ओझाकी चोट बचाना, भूतका भय आदि उत्पातोंसे रक्षा पानेके लिये यह मंत्र पढा जाता है। हम अपने नाजरीनोंसे इन मंत्रोंके आजमानेकी प्रार्थना करते हैं। भाषाके संबंधमें तो हम पहलेही कह चुके। इन मंत्रोंमें पीरपयगम्बर, कालिका और कामाक्ष्याका नाम भी हैं। इस मंत्रमें हिन्दू मुसल्मान दोनों धर्म एक हो गये हैं। इससे यही समझमें आया कि हिन्दू मुसल्मान सब कोई इन मंत्रोंको इस्तेमालमें ला सक्ते हैं। हमने हिन्दू मुसल्मान दोनों जातिके स्याने दिवाने देखे हैं। तो भी यह बात निश्चय है कि मंत्र-शिक्षा करनेके लिये धर्म, साधना, ध्यान, जपकी आवश्यकता नहीं होती। अगर ऐसा होता तो मुसलमान या नीच जातिके कोई मनुष्य भी ओझा नहीं बन सकते। हमने इस पुस्तकमें दो

एक मुसलमानी मंत्रभी लिखे हैं। उन मंत्रोंके देखनेसे मालूम हो जायगा कि मुसलमान लोग इन मंत्रोंका केवल विचारही नहीं करते, वरन सिद्धि प्राप्त करके इन कामोंमें बडे होशियार हो गये हैं, फिर उन्होंने नये २ मंत्र बनाये। इन बातोंको ध्यान धरकर पढनेसे प्रसन्नता होती है, पर अफसोसकी बात है कि इन बातोंको कोई भी खयालसे नहीं पढ़ता।

सर्पविष

अक्सर सांपके काटनेसे आदमी जीता हुआ नहीं बचता विशेषकरके कालगिडार और गोखुरा कौडियालेका काटा तो जिन्दगीसे हाथ धोही बैठता है। न आयुर्वेदमें न अँगरेजी शिक्षामें अबतक कोई दवा सांपके काटेकी कारगर निकली है। लेकिन अति प्राचीन कालसे भारत वर्षमें मंत्रके द्वारा सांपका इलाज हुआ करता है। अगर यह मंत्र बिलकुलही झूठ होते, अगर इनके वसीलेसे कोई भी काम सिद्धि नहीं कर सकते अगर यह मंत्र सिर्फ ठगाई करनेके वास्ते होते तो किसी प्रकार यह चिकित्सापद्धति अब तक इस देशमें न चलती। जो कुछ भी हो जहां तक हम संग्रह कर सके वह लिखा। बडे दुःखकी बात है कि छिपाते २ सर्पके विषकी चिकित्सा एकबारगी लोप हो गई।

सर्पकी चिकित्सामें बंधन बांधना।

मंत्र–धवनि धवनि धवनि सार धवनि धरिते विष नाई आर हाडे मासे धवनि फटे। धवनि धरिते विषना ए उठे।

इस मंत्रको पढते, जहां तक सांपका जहर चढ गया है,

वहांसे कुछ ऊपर खूब जोरसे कसकर तागा बांधना चाहिये। इसका एक मंत्र और भी है।

तागा बांधनेका मंत्र। तागा तागा तागा ब्रह्मा विष्णु महेश्वर तिन देव लागा। ए तागा नडे चडे। ईश्वरी करतार करे।

तागा काटना। तागा बांधनेके समय यदि तागेके ऊपर विष हो, और नीचे तागा बांधा हो तो तागेके बंधन काट दे।

मंत्र–तागा तागा तागा। ब्रह्मा विष्णु महेश्वर तिन देव लागा श्मशानेर घाटेर शृगाल काडेरा। आय विष तुई लागा छिडे भस्म हयेजा। अन्य प्रकार। धन्वि बांधे धान धन्या। धन्वि बांधे धान फुल्का। धन्वि बांधे गोरक जाति। धन्वि काटे गौरी पार्वती।

अंचलमें बांधना

सर्पके विषको ओझा अंचलमें भी बांध सक्ता है। इसका यह मंत्र है।

मंत्र–ओ पारे धो पानि कापड काचे। पद्म पाति विषभाषे धो पानि तुइ गुरु। आमि तोर शिष्य। अंचले बांधिया अमुकार अंगे बांधि लाम कालकूट विष। यह मंत्र पढकर अपने कपडेके अंचलमें बंधन करें।

अगौछेका पढना

मंत्र–आकाशेर तले पडलो गरुड गामछा लइया धरे सकल विष। नाई गामछार वार। विष नाई विषहारीर आज्ञा।

जल पढना

इस मंत्रसे एक नया अँगोछा पढकर उसको रोगीके माथे पर झाडै, विष दूर हो जायगा।

मंत्र–आदर बाडन मथन मथिले। याहाते विष उपजिले तार कान्देन दुर्गाकान्देन कान्देन माविषहारी आई विषखाई ये जाहि आ शिवाइ जने खाइलो, स्थले खाइलो देखया मनसार आज्ञा।

एक नई कोरी हांडीमें जल लेकर उसमें पांच दूबके नाल डालकर इस मंत्रसे पानीको पढे। उसके पीछे यह पढा जल रोगीको दिखातेही बिष दूर हो जायगा।

विषका झाडना

इसके दोंनों मंत्र नीचे लिखे हैं।

(क) काली सरसोंकी जड अमावसकी रात्रिमें तोडकर रखले (प्रत्येक ओझाको अपने पास रखना चाहिये) इसको ऊंगलीके बीचमें रखकर पृथ्वीमें हाथ लगाय नीचे लिखा हुआ मंत्र बारम्बार पढकर पृथ्वीमें रखे, हाथों पर फूंक मारे।

"जे लालाते लाला पातियाला शिष। दृष्टे उठिल कालकूट विष। क्षौर नांगल काञ्चन विष। तात उठे काञ्चनेर विष। असमय परीराय स्मरण निलआई। पद्मार आइ पद्मा उडियाय। दुर्घापाते हते चालाय। जोर विष तोर पाय।"

"चल चल हात चल। चाओंमयी विषय बल। बोला हात उजान धाइ। आचलीर विष गाउत पाइ। हात चली विषत पर पद्मार आज्ञा नेतुचवर। गुरुर आज्ञा मोर मंत्रे गुचिअय। जरत् कारूर बध लागे गो हानीर पाय।"

बार बार इस मंत्रको पढे, और हाथके ऊपर फूंक दे। जिस स्थानमें विष होगा वहीं पर हाथ आजायँगे।

(ख) ॐ सिद्धि। शङ्खूर अंग। अष्ट बेटा तोर अङ्ग,

बेंटार नाम कांई पूजेर नाम। अंगयान चौर नाम। छाइ खरान निर्विष खांरण ओरे गोसांई मोर कि इल ढेके मारिते विष, मोमो, मोमो, कांइ कांइ कांइ विषनाई।

इस मंत्रसे रोगीको झाडकर नीचे

लिखा हुआ मंत्र पढे

"रत्क भु कु सु कु मुत्कार हार। चापवे धैयाछि विषनाइ तार। ए देवी आद्यार काहिनी।"

मंत्र-"थापडे विष करिलाभ पानि।"

यह कहकर डसे हुए अंगमें थप्पड मारे।

मंत्र-"शंखुर पेटार धन मूले तिन फूये विषकरि लाभ पानि। यह मंत्र पढकर फूंक मारे।

मंत्र-थु थु देवीर काष्ठे खाओ। आरे विष माटी जाओ।

यह मंत्र पढकर काटी हुई जगहमें थके, विष दूर होकर रोगी निरोगी हो जायगा। सत्य मिथ्याकी परीक्षा करनेमें कुछ हानि नहीं होगी, इस कारण इन मंत्रोंकी परीक्षा अवश्य लेनी चाहिये। इस प्रकार सांप विष झाडनेके बहुतसे मंत्र हैं, जिनमेंसे थोडेसे प्रकट हुए हैं। ज्यादातर अब भी "ओझा" लोगोंके दिलोंमें पोशीदा हैं। जब तक यह छिपे रहेंगे, तब तक हम जाहिर करनेमें मजबूर हैं। हमने इन मंत्रोंको बडीही मुश्किलसे इकट्ठा किया है। कुछ मंत्र "उड्डीश" नामक उपतन्त्रसे लेकर इस पुस्तकमें मिलाये गये हैं। सर्पके विषका एक मंत्र और लिखकर वादको दूसरे मंत्र लिखे जायंगे।

उडन-"करोचि खट वट वैहुति नाड। महादेव बइले

गात बड जड । चोट लागिल्क जन्मसरि । जन्मांतरगते स्मरि हरि हरि । जारे विष तुइ अन्तरीक्षे हरि । उजल शङ्कर-मणि हरे । धाई शब्दे विषमरे । उडिल विष स्फटिक वर्णे । नाई विष हरि शरणे ।"

इस मंत्रको पढकर रोगीको झाडनेसे निश्चय ही विष उतर जायगा ।

निम्न लिखित मंत्र जलमें पढकर रोगीको पिलावैं और खालिस सरसोंका तेल इस मंत्रसे पढकर घावमें लगावैं ।

मंत्र–ॐ नाके शङ्कर रचित । जेंइ जाने एइ चरित । ताहार करो गोते न थाके हारिश दन्त हारिश, नाक हारिश गुह्य हारिश । ज्योति युता मोतिमुता । वेह जाने ग्रामेर चतुराच्छेदे । अगत्या ब्रह्महत्या पातक भवति । यदि विद्या न सिद्धति । अगत्या ब्रह्महत्या पातक भवति ।

चौसांपा झाडना

अगर अँधियारी रातमें काटे । सांप बीछू या और कोई जन्तु न जाना जाय तो इस मंत्रसे झाडदे ।

"घोर मेघ आंधार गति । कि सांप खेले न जानि जाति । आट नाग खोल चित्त । वार वोढा नेर जाति । एलुई चिति, वेलुई चिति, केंथोचिति, कडुई चिति, शेंको चिति, निलो चिति, गेछो चिति, डोलो चिति, चित वेचिति, सापा अपापा भीम रुल प्रभृति । विछे माकडशा छत्रिश जाति । जे जाहार जानि जनम स्मौरि पडि । पालटरे विषतोंके चण्डाल जाति । तोके श्रीमहागरुड हुङ्कारांते ।" यह मंत्र तीन वार पढकर घावके मुखपर फूँक मारे ।।

थाल पढना

"थालापडि थूलपरि धां धि वलिये। अमुंकेर अंगेर विष पाला उडिये। थालापडि थूलपडि धां धि स्वाहा। अमुकेर अंगे विष लागे तलगै थारुगा। कार आज्ञ कंसासुर नृपितर आज्ञे धनपति स्वाहा।"

कांसीकी साफ धोयी हुई थाली लाकर ऊपर कहा हुआ मंत्र नौ बार पढकर थालीको रोगीकी पीठपर लगा दे। अगर विष होगा तो थाली पीठपर लग जायगी। अगर विष न होगा तो गिर जायगी।

दर्द दूर करना

मंत्र–वात् रे वात् जान लोम तोर जाति अमावस्या मङ्गलवारे तोर उत्पत्ति। उइया वात्, पुइया वात्, जुइया वात्, पाथुरिवात्, सजष्ठिया वात्, रामे बोलेन हरुत्। लक्ष्मणे बोले न चल चल अमुकेर अंगे थाकिवार पैल लङ्का पड सिद्धि गुरु श्रीरामेर आज्ञा। गङ्गा यमुना त्रिवेणी अमुकार काहिनी अमुकार खण्ड कत ठना मानि।

इस मंत्रसे जल पढकर वह जल रोगीको पिलावे और माथे व आंखों पर छिडकै।

पेटसे आंव खूनका निकलना बंद करना।

जल पढना– सागरेर कूले उपजिल शूल। आरे पीओ पीओ पानि। अमुकेर सूचिनाम रक्तशूल छाडानि धर्मेर आज्ञा। यह मंत्र पढकर जल पियै। आंव खूनके दस्तोंका आना बंद होजायगा।

यह रोग केवल मंत्र और चुटकीसे भी आराम हो जाता है। नीचे चुटकीका मंत्र लिखा जाता है।

चुटकीका मंत्र–"झमकरि झमकरि झमकदार भूरिखण्डा विखण्डा तो घूमकरि घूम घूमाइया ताहे स्फटिकेर मुण्डि मूल करि गरल भाव हं ह्यानुकिक अति बडि भिडि ऐ ऐ बीर सो भट सम्भवे, भरमहा धर्मेर आज्ञा। पेट समान, वापखान, भूमि गमने ना छाडिछे दान। विमातृ खानि सहोदरशाक्षी, माथेर हाथ बाडाइलि, कानाजूम करि रत्नाकर समुद्रे दिले भाषाइया बात बात चात धूप खाओ अवतार कहे मोरे। महिमण्डल भरकर, एकान्धे था किया पर कान्धेपड मोर बोले आसिवि। मोर बोले चलिवि। मोर बोले जावि। क्रीं कारे छांडिया जावि, महाकालीर आज्ञा।"

इस मंत्रको पढनेके समय रोगीके मस्तक और शरीरपर बीच बीचमें चुटकी बजाता जाय।

बगली दर्दका दूर करना

वात् वात् अकाल वात् अन्धवात् कुनकुने वात् कुटकुटरे वात् आमार प्रतिचक्रेशीघ्र फाट। तौमार डांके पवनपुत्र हनुमान कार आज्ञाय राजा श्रीरामेर आज्ञाय। १०८ वार जप करनेसे सिद्धि होती है।

खालिस सरसोंका तेल बगली दर्दकी जगह लगाय आहिस्तेसे हाथोंको बदनपर फिराता रहै। हरेक मंत्र पढने पर फूंक मारे।

अतिसार

जलके पढनेका मंत्र–गंगा यमुना तीर्थेर पानि। ये

काहिनो काहिनी। से खाइनो पानि। आज हइते दूर हइनो अमु-केर वान्दाया तुलानी। सिद्धि गुरु श्रीरामेर आज्ञा। जो मंत्र पढे वही जल पढे हुए पानीको पिये। जहां २ पर 'अमुक' शब्द लिखा गया है, वहां पर रोगीका नाम लेना चाहिये।

शांति करना

मंत्रके बलसे क्रोधी पुरुषको भी ठण्ढा किया जा सकता है। किसी क्रोधित हुए पुरुषकी ओर देखकर यह मंत्र पढे और तीन वार फूँक मारे, तत्काल उसके क्रोधकी शांति हो जायगी।

मंत्र–भूल भूल कि तोलामूकी, उठ मेलकी पातास कूँडे लाग भेलकी सभा जूडे भेलकी चले आगे। आमि जारे सलाम करि भेलकी लागे तारे वेडे आजरे पांजरे लाग, चके मुके लाग, होकसिद्धि गरुरपा दोहाई काटर कामिक्षारमा, हाडिर झिर आज्ञा चण्डिरपा।

कुत्ते गीदडका विष दूर करना

मंत्र–दोहाई मनसादेवीर दोहाई। चिरमाता विषहरि कतनिदयाओ। वोसे घरे मनसार।

महामंत्र–(अमुकेर) अंगेर अमुकेर विष सेंदो एई कांसार तेंतर सेंदो।

रोगी इतवारके दिन अति सबेरे ओझाके मकानपर जाय वहां पर रोगी और ओझा एकसाथ स्नान करके शुद्ध हो दोनों पूर्वकी ओर मुख करके बैठे। ओझा रोगीकी पीठकी तरफ खडा होकर एक साफ सुथरी कांसीकी थाली रोगीकी पीठपर लगाकर यह मंत्र तीन बार पढै और हरेक बार फूंक मारै। जो रोगीके शरीर में विष होगा तो थाली ऐसी चिपक

जायगी कि अगर थालीको छुटाया जावे तो उसके साथ साथही रोगी भी गिर पडेगा। जब विष निकल जायगा तो थाली भी अपने आप छुट जायगी।

कुत्ते गीदडके काटे हुएको जल पढना

मंत्र–आकाट जाग, बसार पोडा पोटोम तोमार काय बाघ भाल्लूक शेयाल कुक्कर. गुआ आकार आञ्जिनार विष करिया आन सिद्धि गुरु श्रीरामेर आज्ञा बाटेर कालिका चण्डिर।

जहां पर जल पढे हुए को विशेष करके यह न लिखा हो कि पिया जाय वहां पर यह समझना चाहिये कि वह जल रोगीको पीना चाहिये।

वशीकरण

फूल पढना। नीचे लिखा हुआ मंत्र फूलोंमें पढकर किसी युवतीके अङ्गमें मारै तो वह वशमें आजायगी।

मंत्र–ॐ आदेशगुरुकों कांऊरुदेश कामाक्षा देवी तहां ठै ठै इस माइल जोगीके अंगमें फूल किवाडी, फूल चुन-लावै लोना चमारी फूल चल, फूल फूल बिगसे, फूल पर बीर पर सिंह बसे। जो नहीं फूलका बिष! कबहु न छोडे मेरी आस। मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फूरो मंत्र ईश्वरोवाच।

बुखार उतारना

मंत्र–मनसामेदाम नवमे कपटी बसै कपाल हावके मूले हनुमण्डकी आप सीसी जङ्ग पाढान बिचान मंत्र शांति गायत्री तामसेन देवता मोहज्ञाराजा तिजाट, एक ज्वरा, दो ज्वरा, तिनज्वरा, चारिज्वरा, पांचज्वरा, सातज्वरा, जोर

है तो राजा अजयपालका च बहै तेंतिस कोटदेवता तेरे मंत्रकी शक्तिसे चलैं। चोंचन खण्डमें जाय चोर न मारे वादा न खाय। क्षणे बाम क्षणे दक्षिण क्षणे आसे होर अचन सोरो स्मरिरे काया बिख्यात् होर।

बीछूके विष दूर करनेका मंत्र

"ॐ सरह स्फुः। ॐ हिलिमिलि चिलिस्फुः। ॐ हिलि हिलि मिलि चिलिस्फुः। । ब्रह्मणे स्फुः सर्वेभ्यो देवेभ्यः स्फुः" यह मंत्र पाठ कर काटे हुए अंगमें फूंक मारै।

ततैया मौंराके विष दूर करनेका मंत्र।

मंत्र–"चूण चूण चूण विषेरपाणी। हाडेर मितरमासरे कूंडे। मर विष तुई चूणे पूडे।"

सुखप्रसव

पानी पढ़ना। नीचे लिखा हुआ मंत्र पानीमें पढ़कर हामिलाको पिलावे बच्चेके पैदा होनेमें तकलीफ न होगी।

मंत्र–छं कौंरादेव्यै नमः। ओं आदेश गुरुको कौंरा वीरका बैठी हात सब दिराह भज्ञाक साथ फिरे बसे नाति विराति मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति कौंरा देवीकी आज्ञा।

बाणमंत्र

किसी पुरुषको देखकर यह मंत्र पढ़ा जाय तो उसको तीर लगनेके समान कष्ट होगा।

मंत्र–"ओंनमः आदेश गुरुकों काला भैरव कपिल जटा हाथ टीकरामें ले चौहट्टा हाडकी धुनुईन पलोंको बाण भिकों देमों भिमकों न आवे तो ईश्वरी पार्वतीकी आन महादेव लागे देखो मेरी शक्ति गुरुकी भक्ति फुरो मंत्र स्वाहा।"

वशीकरण

घी पढनेका मंत्र–ओनो ओनो साओ। ईमोर माम तोर पो मोर कोलेओ इरयम यदि कोणेर मायाधरो ओसिद्ध सिद्धेश्वरीर माथा खावो।

इस मंत्रको गायके घीके साथ पढ़कर वह घी जिसको खिलाया जायगा, वह वश हो जायगा।

भात पढना

इस नीचे लिखे मंत्रको भातमें पढै उस भातके खानेसे अपदेवता दास हो जाते हैं।

मंत्र–"भात् बाज्दम् भात् वाडम भाते डेमपानि। एभाते ऊपरे ठैसे चोंसठि योगिनी। ॐ कुलहते डाकिनी डाके। अमुकारे भात्पडिया देम। मोर नफर हइया थाके। श्रीं श्रीं श्रीं सिद्धि गुरुव पाओ। कामरूप कामाख्या माओ। एकनाने करे, शास्त्रपाने भरे। श्रीखोराजर आज्ञा रक्षा करे। डाकिनीरवरे।

जहरी लम्बूहा

ॐ चौदाड, कालकूटे विष पाताले घा हाडेर घर मासेर कूडे मर विषतुई अग्निते पूडे। एक एक बार पढकर जलाय जलाय तीन वार इस मंत्रसे घावके स्थानको सेकदे।

स्थानको चलाकर चोरका पकडना हमारे नाजरीनोंने अकसर सुना होगा। मलूम होता है कि मुसलमानोंने इसको निकाला है क्योंकि इस कार्यके मंत्र फारसी भाषामें लिखे हुए हैं।

मंत्र–"ॐ नमो बिस्मिल्लाहउलरहमाने रहीम महम्म-

दातार अनेकंसनामहदीताहवीक मानहचापनानतिस उपरि ठैंठ महम्दा वीर चठासनदीकुंचनाचवादी कुंचलाचभूत, कुंचला-ओ प्रेतकुंचलाओ चौषट योगिनी कुंचलाच जहां तहां चलाओ जहां बांधो तहां चलाओ जहां द्रव्य तहां चलाओ । इस बालकका कहा न करे तो शुअर जाय हराम जो जो इस बालक-का कहा न करे तो अपनी माही हराम करके खाय चेन्दै लये कारउ पाचन हाच निरजतहाबरी वाचाचुके इसवां पृथ्वीको पाप तेरे माथे दल्वा दनं छांह महम्दाबीर पठान तुरकनीके जाय तेरी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वर वाचा ।"

स्थान चलानेके दो एक मंत्र और भी हैं एक हिन्दू मंत्र हमने संग्रह किया है सो नीचे लिखते हैं ।

मंत्र–"आचल चालोम । सुचाल चालोम काकार उपरर देवताचालन त्रिकोणपृथ्वी चालन । पानीरसंगे कुम्भीर चालन । शिवेई चालन बागाम्बरचालन महादेवेर खाट पाट चालन सिद्धादुर्गाचालन चारिसंचार चालन । चलक-ताचनयेगि याछि अमुकार द्रव्य ताहारे गिया धर श्रीरामेर आज्ञा ।"

इस मंत्रके पढनेसे चोर का स्थान मालूम हो जायगा ।

बोडा सांपका विष उतरना ।

नीचे लिखा मंत्र पढकर रोगीको बांसके ऊपर सुलावे और जलाधार अर्थात् बराबर शिरपर पानी डाले ।

मंत्र–"श्रीहरि श्रीहरि बल ओरे आमार भाई । कामा-ख्यामायेर वरे बोर विषनाई नीछाक विषेर जोर आरनाई विष प्रसाद दिवरे तोरे छारवाइ रिश सर्वकाजे मनशा पूजा

विव दुध कला। महेक नहेक करएइ मोर बाला चन्द्र सूर्य शाक्षी भाई आमार बाकी सार। टम्बर भैरवेर किरे शीघ्र ऐसे धर। पानकर भैरु ठाकुर निनड आचिल ध्यां ध्यां ठचां ठचां निहत हईला आय आय वर शिब छापार छाना षत। आमार एइ जल सारे विष हइ लहत। नाइ विष नाइ विष। नाइ विष कार आज्ञे कौरुपीर आज्ञे।"

इस प्रकार प्राय: सब रोग और सब मुसीबत दूर हो सक्ती है, हम जानते हैं कि दुनियाकी ऐसी कोई तकलीफ नहीं है जो मंत्रके वसीलेसे दूर न हो सकती हो। परंतु करीब करीब यह मंत्र छिपसे गये हैं, ओझा लोग किसी तरहसे-भी नहीं बतलाते।

इन मंत्रोंके बारेमें दो बातें और हैं, जिनका जिकर। हमने ४–५ सफेपर किया है; उम्मेद है कि जो कुछ लिखा गया है उससे नाजरीनका दिल कुछ थोडासा खुश होगा। हम कह सकते हैं कि बंगालेके किसी मंत्रको आज तक किसी हिन्दी किताबवालेने नहीं लिखा।

गण्डा

मंत्र पढते २ किसी स्थानके चारों तरफ जो दाग दे दिये जाते हैं। उसका नाम गंडा है, गण्डेके बलसे कोई अपदेवता गण्डा धारण किये हुए पुरुषके पास नहीं आसकता। गण्डा पहरनेसे किसी प्रकारका अमंगल भी नहीं हो सकता। रामचन्द्रजी जब मायामृगके पीछे गये थे तब जानकीजीको रेखाहीके भीतर रख गये थे। दुरात्मा रावण रेखाके भीतर

जाकर जानकीजीको हर नहीं सका। नीचे हम इसके दो दृष्टांत लिखते हैं।

१ गण्डेका मंत्र

"रामकुण्डली ब्रह्मचाक। त्रेतिसकोटि देवा देवी अमुक कि वेडियाथाक। अमुकेर अकेर बाण काटम् शर काटम् सन्धान काटम् कुज्ञान काटम्। कारवाणे काटे राजा रामचन्द्रेर बाणे काटे। कार आज्ञा, राजा रामचन्द्रेर आज्ञे। एइ झण्डी अमुकेर अंगे शीघ्र लागूगे।"

नीचे लिखे मंत्रको पढकर चारों ओर रेखा खेंचनेसे किसी प्रकार का अपदेवता आकर अमंगल नहीं कर सकता।

२

मंत्र–"ॐ अइईक्ली पुरुसिद्धेश्वरी अवतर अवतर स्वाहा। ॐ दशांगुलि भीन्दलि विरुडुहारिभैरुण्ड भैरवी विद्याराणी रोलाबन्ध, मुष्टिबन्ध, बाणबन्ध कृत्यबन्ध, रुद्रबन्ध, नेखबन्ध, ग्रहबन्ध प्रेतबंध, भूतबन्ध, यक्षबन्ध, कंकालबन्ध, वेतालबन्ध, आकाशबन्ध, पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण सर्व दिशाबन्ध। ये और ये आछि कह हस हस अवतर अवतर अवतर दशाविप्राराणी दशांगुली शतास्त्र बन्दिनी बन्दासि हुँ फट् स्वाहा।"

रक्षा ताबीज

नीचेका लिखा हुआ रक्षामंत्र बिलकुल मुसलमानी मालूम होता है।

मंत्र–"बिसमिल्लाह उलरहमानेरहीम। अक्सपारालमीनमद दीम, बिसमिल्लाह उलरहमानेरहीम। मुलडालसव-

दअहमद कङ्कनयिस्या खैगे पाके इलाही जोरका, अज्जुसा। सा। दिल्लिका पुखराजठगा, वनिहीका खीथ भूत नाम वादा महम्मदा वीर तौ आवसेले तोजखालिक पुतलटाफकीर काउँरुका जैसे वमेकी तिजारी मरतजीय तुफण्ड आबङ्ग जे सीटक करले भाटीचा बांयें अष्टेको बाँधे वा टीका बाँधे व लाटी सनारी के बाँधे डीरालेखत। पयको बाँधे, चली चलाईको बाँधे आपथरीको नदी नालीको बाँधो सिनि-सिना उजूको बाँधो वोणीद्रणा मरइलीको बाँधे डाहर बाँधे रक्त-पित्तको बाँधे भवर पित्तको बांधे बाम्बेमहिवादकुसारीको ले बाँधो मोहा मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति मेरी भक्ति बाचा ब्रह्मवाचा चुकेट भासकके मजारकी सावी सुलतानसबद अहम्मद कबरमें सोडाटीको ले इव तावीज जाटा बिसमिल्लाह उलरहमानेरहीम अक्सगुमाचल नेमसदीम।"

यद्यपि यह मंत्र फारसी भाषामें हैं परंतु इसमें संस्कृत हिन्दी और वङ्गभाषाके शब्द भी हैं। इससे साबित हुआ कि मुसलमानोंने इस वि ाको हिन्दुओंसे सीखा। मुसलमानोंने तन्त्रशास्त्र पढकर कुछेक तांत्रिक धर्मके ऊपर विचार किया था। बल्कि कोई शख्स सिद्ध भी हो गये थे। जो सिद्ध हो गये थे उन्होंनेही यह दो एक मंत्र प्रगट किये, इस बातमें कोई भी शक नहीं है।

अपदेवताशान्ति

यकीन न लाओ या लाओ भूतका बयान सब देशोंमें फैला हुआ है। भूत, प्रेतनी, डाकिनी वगैरह अपदेवताओंका आदमियोंके ऊपर जोर जुल्म करना सबही कोई जानते हैं।

हमारे मुल्कमें दो बातें बहुतही जोरसे फैली हुई हैं। अर्थात् इन दोनों बातोंका सबही यकीन करते हैं। इनमें एक "हवाका पकड लेना" दूसरे "भूतका शिरपर आना" छोटे २ लडके लडकियों पर हवाका आना और भूतका सवार होना अक्सर हुआ करता है। आजकलके वैज्ञानिक लोग इन दोनोंमेंसे एकभी नहीं मानते। वह हवाके आनेको हिष्टरिया रोग कहते हैं। जो कुछ भी हो हमारे देशमें यह दोनों बीमारियां कसरत-के साथ हुआ करती हैं। अक्सर मुकामों पर ओझा लोगोंने इन बीमारियोंको आराम किया है। इन इमराजके बारेमें जहां तक कुछ हमको मालूम हुआ वह नीचे लिखते हैं।

भूत छुडाना

पहलेही कह चुके हैं कि भूत बडेही उपद्रवी होते हैं। और स्यानें व ओझा लोगों पर खार खाये रहते हैं। मौका पातेही जान लेलेते या बेहद तकलीफ देते हैं। पस इन मुसी-बतोंसे बचनेके लिये पहले अपनी हिफाजतका मंत्र सीखना चाहिये। सो नीचे लिखा है।

भौतिक आत्मरक्षा मंत्र–"झाडि काडि कापडपिन्दि वीर मुष्टे बाँधिबाल। बुले एलाम मशान भूम होते भैरव काटार हाते लोहार बाडी बाम हाते चामदंडि। आज्ञादिल राजा चुडं हाते लोहार किला मुद्गर घिनि, विगलि घुंडि कार आज्ञें, राजा चुडूङ्गर आज्ञे विग्लि घुंडि।"

दानवादिदूरीकरण

नीचे लिखा हुआ मंत्र जल पढकर रोगीको पिलाओ और शरीरपरभी छिडको। इसके सिवाय कच्चे नीमके पत्तोंकी धूप दो।

मंत्र–"ओं आं क्रीं हूं मार हस्त गां ह्रीं कारे समस्त दोषान् हर हर विसर विसर हुं फट् स्वाहा।"

भूत छुडाना

मंत्र –"तेलनीर तेलपसार चौरासी सहस्र डाकिनीर छेल, एते लेरभार मुइ तेल पडियादेम, अमुकार अंगे अमुकारभार, आडद्दन शूले यक्षा यक्षिणी, दैत्या दैत्यानी, भूता भूतिनी, प्रेता प्रेतिनी, दानवा, दानिवी, नीशाचौरा शुचिमुखा गारुड तलनम वार भाषइ, लाडि भोगाइ यामि पिशाचि अमुकार अंगेघा, काल जटार माथा खा ह्रीं फट् स्वाहा सिद्धि गुरुर चरण राडिर कालिकार आज्ञा।"

सरसोंके तेलमें यह मंत्र पढकर रोगीके शरीरमें छिडके भूत छोडकर भाग जायगा।

भौतिक विद्या

मनुष्यकी दृष्टिके बाहरे अन्तरिक्षमें किसी प्रकारके जीव घूमते हैं या नहीं, इस बातके साबूत करनेका कोई वैज्ञानिक उपाय नहीं है, लेकिन दुनियांकी पैदायशसे लेकर आजतक शिक्षित अशिक्षित सब लोगों के दिलोंमें भूतका होना जम रहा है। बाइबिलमें देवदूतों (Angels) का होना लिखा है। कुरानशरीफमें परी (Pari) का व हूरोंका हाल लिखा है। हिन्दूधर्मशास्त्रमें देवदानवोंके बहुतसे हालात लिखे हैं। पस मनुष्यजातिको आदतहीसे यकीन है कि इन्सानी नजरके बाहरे कोई जानदार आ-समानमें घूमा करते हैं। इसी तरह बढते २ यह अकीदा बहुतही बढ गया है। आज कल तालीमके ज्यादा फैलनेके

साथ २ भूतोंका अकीदा इन्सानोंमें से कुछ २ दूर हुआ तो है, लेकिन बिल्कुल दूर नहीं हुआ है। हिन्दोस्थानके रहनेवालोंमें अब भी भूतोंके होनेका यकीन जोरशोरके साथ फैल रहा है, विलायतवालोंमें भी यह यकीन कुछ कम नहीं है।

वास्तवमें भूत प्रेतके जाननेका कोई उपाय नहीं। बहुत कम आदमियोंने भूतोंको देखा है। लेकिन जब किसी २ ने भी भूतको देखा है, तब जरूरही भूत प्रेतका होना साबित होता है। हमारे नाजरीनोंमेंसे शायदही किसीने भूत देखा हो लेकिन भूतोंके कहावतें और भूतोंके मकानोंका जिकर बहुतेरोंने सुना होगा। अनेक स्थानोंमें भूतोंका रहवास हो जाता है। इन मकानोंमें कोई भी नहीं रह सकता रातकी तारीकीमें शैतानी आवाजका आना शोर मचना वगैरह सुनाई आता है। ऐसे मकानोंको बहुत आदमियोंने देखा होगा। लेकिन हरेक आदमी ख्वाहिश करतेही भूत व जिन्नातके मुकामातको नहीं देख सकता।

भूत प्रेतोंको तो बहुतेरोंने नहीं देखा लेकिन भूतसे पकडे हुए आदमियोंको बहुतेरोंने देखा है। हमारे पडौसमें एक नायन रहती थी, उसके ऊपर उसकी सौतकी आत्मा आया करती थी, वह ऐसे २ काम करती और ऐसी २ बातें बतलाती थी कि जिनको देख सुनकर सब लोग ताज्जुबमें आया करते थे। त्रिवेणीके निकट एक स्थानमें भूत हकीमी किया करते हैं। ओझा लोग वहां जाकर पूजा करते हैं, तब भूत खुदबखुद मरीजके माथेपर दवाई रख जाते हैं और जरूरत होने पर रोगीके साथ बातचीत भी किया करते हैं। आज कलके तालीमयाफ्तः

इन बातोंको सुनकर हँसीको नहीं रोक सकते हैं। बेतालीमयाफ्त: हवाके दबानेको कनह्वलसन और क्रूप (Couvulsion and Croup) कहते और भूत आनेको हिष्टिरिया (Hysteria) रोग कहते हैं। यह बातें रोगसे हों या भूत प्रेतोंसे हों, परंतु बहुत मौकोंपर ओझा लोगोंके वसीलेसे आराम होती हैं। बहुतोंने देखा होगा कि भूतसे पकडी हुई औरत ओझा लोगोंके सामने तअज्जुबकी कितनी बातें करती है। और उसके बदनमें जितना जोर है उससे कही बढ चढकर काम करती है। कभी जलसे भरा हुआ कलसा दातसे पकडकर बहुत दूर ले गई, कभी भूत उतारने के समय भूत बडे जोरसे चिल्लाकर उतर जाता है। कहीं पर नजदीकही किसी मुकाममें किसी पेडकी डाली बडी आवाज के साथ खुद बखुद टूटकर गिर पडती है। जो कुछ भी हो इन बातोंके अन्दर जरूर कुछ न कुछ पोशीदा बात है, जिसका भेद विज्ञानियोंके परदादेसे भी खुलना मुमकिन नहीं।

पहले जमानेमें हिन्दोस्थानके लोग भूत प्रेतके ऊपर बहुतही यकीन करते थे, यहां तक कि तभीसे एक विद्या भी चली आ रही है कि जिसको भौतिक विद्या कहते हैं। इसका खास सबब यह भी है कि सनातन हिन्दू धर्मके श्रेष्ठ देवता महादेवजीके साथमें भूत प्रेत योगिनी डाकिनी वगैरह रहा करती हैं। पस इसी वास्ते हिन्दू लोग भूत प्रेतोंपर हमेशासे यकीन करते आये हैं।

भूत प्रेतोंको दो खास किसमोंमें तकसीम कियाजासक्ता है। एक तो महादेवजीके साथ रहनेवाले भूत प्रेत

योगिनी और पिशाचादिक और दूसरे इन्सानोंकी रूहोंका गिरोह। पहली किस्मके भूतोंसे इन्सानोंका कुछ नुकसान नहीं होता। लेकिन दूसरी किस्मके भूत हमेशाही इन्सानोपर जोर जुल्म और सितम किया करते हैं। दोनों किस्मके भूत बड़े ताकतदार होते हैं, विशेष करके महादेवजीके संग रहनेवाले भूतोंकी सामर्थ्य तो हिंदू शास्त्रोंनेभी बहुतही लिखी है। भारतीय ऋषिलोग दोनों किस्मके भूतोंपर हुकूमत करनेका तरीका लिख गये हैं, सो भी आगे लिखा जायगा।

पहले यह देखा जाय कि वक्त २ पर हम लोगोंको जो भूत सताते हैं उनके बारेमें हिन्दोस्थानी पण्डित लोग क्या लिख गये हैं? यह भूत लोग अक्सर आदमीके बदनको पकड लेते हैं। भौतिक विद्याके जाननेवाले पण्डितोंने इनको आठ किस्मोंमें तकसीम किया है, देव, दानव गन्धर्व. यक्ष, प्रेत, भुजङ्ग, राक्षस और पिशाच। यहां अलग २ तरहके भूत आदमीके शरीरमें घुसकर जुदे २ काम किया करते हैं।

पूरनमासी तिथिको देवग्रह, सबेरेकी सन्ध्याके समय और प्रातःकालकी संध्याके समय दानव, अष्टमी तिथिमें गन्धर्व पडवातिथिमें यक्ष, कृष्णपक्षमें प्रेत, पञ्चमीको सर्प (भुजङ्गम), रात्रिमें रा॰ स और चौदसमें पिशाच पोशीदा रहकर आदमीके जिस्ममें घुस जाते हैं। इन भूतोंके बेशुमार नौकर हैं, कभी २ यह भी आदमीके जिस्ममें घुस जाते हैं। करीब २ यह सब भूत मुहल्लिक होते हैं और इन्सानको तकलीफ देते हैं। इसलिये ऐसी कोशिश करना वाजिब है जिससे इन भूतोंका जोर अपने पर चले नहीं।

भौतिक विद्यामें इसकी बहुत तदबीरें लिखी हैं, उन तदबीरोंको हम नीचे लिखते हैं।

भूतशांति

भूत रोगका इलाज करनेसे पहले जप व होम करना मुनासिब है, उसके बाद किस किस्मका भूत मरीजके जिस्ममें घुस बैठा है यह जानकर कपडा, शराब, मांस, दूध, लहू जो जिसको देना चाहिये वही उस भूतको देना मुनासिब है। जिस २ दिन मनुष्योंपर भूत जुल्म किया करते हैं उस २ दिन भूतोंकी पूजाका करना मुनासिब है। मछलिया, चावल, पुये, छत्तरी और खीर इन चीजोंसे भूतको संतुष्ट करे। इसके सिवाय बलिदान भी करे। लेकिन सिर्फ बलि देनेसेही भूत नहीं छोडता, दवाईकी भी जरूरत होती है। नोचे कई दवाई भी लिखते हैं।

१ बकरा, रीछ, सजारू और उल्लूका चमडा, रुआ और छाग (बकरा) का मूत्र एकसाथ मिलाकर धूनी देनेसे भूत छोडकर भाग जाता है।

२ गजपीपलकी जड, मिर्च, पीपल, सोंठ, आवला और सरसोंको एकसाथ मिलाकर गोह, न्योला, बिल्ली और रीछके पित्तमें भिजोदे। इस औषधिका नास लेनेसे भूत छोडकर भाग जाता है।

३ सिरसके बीज, लहसन, सोंठ, सफेद सरसों, वच, मजीठ, हलदी और कांजी बकरे के मूत्र के साथ पीसकर बत्ती बनावै। इस बत्तीमें बकरेका रुधिर सुखाकर फिर उसका अञ्जन आंखोंमें आंजै, निश्चयही भूत छोड जायगा।

कायदेसे बाहेर काम करने पर महाबलवान् भूत रोगी और इलाज करनेवाले दोनोंहीकी जान लेता है। पस होशियारीके साथ हरेक काम करना चाहिये।

बाणभूत

जो भूत बालकोंको सताते हैं, भौतिकविद्याके जाननेवालोंने उनको नौ किस्मोंमें तकसीम किया है १ स्कन्ध, २ स्कन्धापस्मार, ३ शकुनि, ४ रेवती, ५ पूतना, ६ अन्धपूतना, ७ शीतपूतना, ८ मुखमण्डिका और ९ नैगमेय।

धाई या माताके पहले किये हुए किसी अपकारसे, मङ्गलाचरण न करने से, नापाकी वगैरहके सबबसे बालकोंको भूत सताते हैं। भूत लगने पर बालक कभी रोता, कभी हँसता, कभी चिल्लाता और कभी डरता है।

भूतके पकड लेनेसे बालककी दशा बदल जाती है। इसकी चिकित्सा नीचे लिखी जाती है।

१ सरसों, सांपकी केंचली, वच, सफेद चोंटली, घी और ऊंटकी छाग, मेढा व गायके रोम इकट्ठे करके धूनी दे तो भूत भाग जायगा।

२ सोमलता, इन्द्रवेल, शमी, वेलके कांटे, पाले हुए खरगोशका मूत्र लेकर जिसके शरीरमें भूत लगा हो, मलदे, भूत छोड देगा।

मंत्र तंत्र

इस देशमें भूत छुडानेके लिये मंत्रोंका व्यवहार बहुत दिनोंसे चला आता है। इस वास्ते उन मन्त्रोंका लिखना यहां पर बहुत जरूर हुआ।

नीचे लिखा हुआ मंत्र जलमें पढकर वह जल रोगीको पिलावै और थोडासा सोरा शरीरपर छिडके साथही साथ कच्चे नीमके पत्तोंकी धूनी दे, भूत प्रेत छोड देंगे ।

मंत्र–"ॐ आं क्रीं हुं मार हस्त ह्लां ह्लीं करे समस्त दोषान् हर हर विसर विसर हुं फट् स्वाहा ।"

पहले एक चक्र पृथ्वीमें काढकर उस पर रोगीको बैठाओ उसके बाद "हुं भेद भेद स्वाहा" इस मंत्रसे कानमें फूँक मारे । "हुं" यह मंत्र जप करे । उसके बाद यह मंत्र पढता रहै "ॐ ह्लीं क्रीं हूं फट् स्वाहा ।"

सरसों पढना

पहले नीचे लिखा हुआ मंत्र जप करे ।

मंत्र–"ॐ अघोरे अघोरेश्वरी घोरमुखे चामुंडे ऊर्द्ध्व-केशी ह्लीं स्फीं फट् हुं स्वाहा ।"

उसके पीछे नीचे लिखा हुआ मंत्र पढकर रोगीके शरीरपर सरसों मारै भूत प्रेत निश्चय भाग जायगा ।

मंत्र–"ॐ भगवते रुद्राय चण्डेश्वराय हुं हुं हुं फट् फट् स्वाहा ।"

साधारण

पहलेभी बहुतसे मंत्र लिख चुके हैं जिनको नाजरी-नोंने देखाही होगा । इन मंत्रोंका जरूर कोई अर्थ है इसमें कोई शक नहीं । बहुत आदमियोंनें देखा है कि इन मंत्रोंके पढतेही भूत भाग जाते हैं । इन मंत्रोंके सिवाय और मंत्र नहीं पाये जाते, नहीं तो हम जरूरही लिखते ।

भूतसाधन

तंत्रशास्त्रमें भूतोंके साधनेकी क्रिया भलीभांति लिखी है। अगर तंत्रकी क्रियाके मुआफिक भूतोंको सिद्ध कर लिया जाय तो वह गुलाम होकर हरेक कामको अन्जाम देते हैं। बहुतेरे तंत्रशास्त्रोंमें इसका जिकर है। जिनमें कुछ बातोंका जिकर नीचे लिखा जाता है।

१ अष्टसिद्धिसाधन, २ सुंदरीसाधन, ३ अष्टकात्यायनीसाधन, ४ प्रथमसाधन, ५ किंकरीसाधन, ६ चेटिकासाधन, ७ भूतिनीसाधन, ८ अक्षरीसाधन, ९ यक्षिणीसाधन, १० अष्टनागिनीसाधन, ११ किन्नरीसाधन और १२ पिशाचीसाधन।

आठ सिद्धिका साधन

रोजमर्रा क्रोधभैरवके दो मंत्र तांत्रिक क्रियाके अनुसार जप करनेसे आठ प्रकारकी नायिका मनुष्यकी दासी हो जाती हैं।

मंत्र

१ ॐ वज्रमुखे सरसर फट्। २ ॐ संघट संघट मृतान् जीवाय स्वाहा।

सुन्दरीसाधन

पेडके नीचे देवालयमें, वन, शिवमंदिर, नदीके सङ्गमस्थानमें या मसानमें सुंदरियोंका साधन करना चाहिये।

मंत्र

१ ॐ महाभूत कुलसुंदरी हुं। २ विजयसुंदरी ह्रीं अं।

३ ॐ विमलसुंदरी आः। ४ सुंदरी हुं हुं। ५ ॐ मनोहरी सुंदरी धि। ६ ॐ भूषणसुंदरी क्लीं। ७ ॐ धवलसुंदरी ह्रीं। ८ ॐ मधुमतीसुंदरी स्वाहा ह्रीं।

अष्टकात्यायनीसाधन

तांत्रिक क्रियाके अनुसार मसान अथवा शिवमंदिर वगैरह मुकामोंमें एक चित्तसे जप ध्यान वगैरह करनेसे आठ कात्यायनी ताबे उम्र ताबेदार रहती हैं। इनके आठ मंत्र हैं उनमेंसे दो नीचे लिखे जाते हैं।

महाकात्यायनीमंत्र

१ ॐ हुं स्वाहा हुं फट्।

रौद्रकात्यायनीमंत्र

२ ॐ ह्रौं ह्रौं हुं हुं ॐ ॐ हुं लृ हुं लृ फट् स्वाहा।

टीका–इस मंत्रका तलफ्फुज बडाही मुशकिल है। हम नहीं कह सकते कि हमारे संस्कृत न जाने हुए नाजरीन इसको ठीक २ कह लेंगे।

चेटिकासाधन

चेटिकासाधनके लिये जो मंत्र तंत्रशास्त्रमें लिखा है, वही नीचे लिखते हैं।

मंत्र– ॐ ह्रां कृं कृं कृं कटु कटु ॐ अमुकं कृ कृ कृ ॐ आ।

इस मंत्रका आठ हजार वार जप करे।

भूतिनीसाधन

भूतिनीकी मूर्ति गोरोचनकी बनाकर आठ हजार बार इस मंत्रका जप करे। भूतिनी दासी हो जायगी।

मंत्र–ॐ ह्रीं कूं कूं कूं मम शत्रून् मारय मारय ह्रीं हुं अः।

भूतिनी देवी कई मूर्त्तियोंसे प्रगट होती हैं १ कुंडल-धारिणी, २ सिन्दूरिणी, ३ हारिणी, ४ नटी, ५ अतिनटी, ६ चेटिका, ७ कामेश्वरी, ८ कुमारिका।

अगर यह सब मंत्र सत्य हों, अगर साधनाके बलसे यह ताकतें और भूत जेर हुकूमत हो जायँ तो भी यह विद्या हिन्दोस्थानियोंके वृथा छिपानेसे करीब २ बिल्कुल छिपही गई है। हां यदि रीतिपूर्वक तांत्रिकधर्ममें दीक्षित होकर गुरुकी शरण ले तो निश्चयही कार्यसिद्धि हो जाय। मंत्रविद्या जाननेके लिये विशेष चेष्टा कोशिश और मेहनत करना जरूर है। सिर्फ किताबकीही मददसे पूरा काम नहीं हो सकता।

नीचे कुछ वशीकरणका हाल लिखते हैं।

इन्द्रजालिक विद्यासे बहुत ताकतें पैदा हो जाती हैं। हम एक २ करके सबका वर्णन करेंगे इनमें मशहूर यह हैं १ वशीकरण, २ आकर्षण, ३ स्तंभन, ४ मोहन, ५ उच्चाटन, ६ मारण, ७ विद्वेषण।

वशीकरण बहुत प्रकारके हैं। पहले तो हम दो एक दृष्टान्त और उपाय नीचे लिखते हैं। तंत्रोंमें वशीकरणके इतने उपाय लिखे हैं कि अगर सबको लिखें तो एक बडी पुस्तक तैयार हो जावै।

(क) पेठा (भूमिकूष्माण्ड) और बडके पेडकी जड पानीके साथ घिसकर माथेपर तिलक लगानेसे त्रिलोकीके जीव वश हो जाते हैं।

(ख) पुष्यनक्षत्रमें पुनर्नवाकी जड और रुद्रदण्डीकी जड उखाडै। इन दोनों जडोंके साथ जौ हाथोंमें बाधनेसे सब जगह पूजित होता है। इसके बाँधनेके समय "ॐ ॐ पूरं क्षोभय" इत्यादि मंत्र सात बार पढै। लेकिन पहले बीस हजार बार इस मंत्रका जप कर लेना चाहिये।

(ग) हवासे उडे हुए, पत्ते, मजीठ, अर्जुनवृक्ष और तगर इन सब वस्तुओंको बराबर ले जिसके अङ्गसे छुआ दोगे, वही वशमें आ जायगा।

(घ) मजीठ, केशर, घीकुआर, इमली, चिताकी भस्म और अपना रुधिर इकट्ठा कर अपने वीर्यमें भिगो गोलियां बनावै। अगर यह गोली राजाके शरीरसे लगावै तो वह भी वशमें आजाय।

(ङ) चन्द्रग्रहणके समय सफेद अपराजिताकी जड अपने स्वामीके अङ्गमें लगादे, वह वश हो जायगा।

जय विजय भी वशीकरणसे हो सकती हैं।

(क) उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा या उत्तराभाद्रपदा नक्षत्रमें सबेरेही पीपलकी जड उखाडकर हाथमें धारण करनेसे राजदरबार व सबही स्थानोंमें जय होती है।

(ख) पुष्यनक्षत्रमें गाजुवांकी जड, अपामार्गकी जड उखाडकर शिरपर धारण करनेसे मुकद्दमेमें जीत होती है।

(ग) शुक्ल पक्षके समय पुष्यनक्षत्रमें चोंटलीकी जड उखाडकर शिरपर और बिस्तरेपर रखनेसे चोरका भय जाता रहता है।

(घ) आश्लेषानक्षत्रमें आमलेकी जड लाकर हाथमें बाँधनेसे चोर, व्याघ्र और राजाका भय नहीं रहता।

(ङ) अङ्कोलफलके तेलके साथ आमलेका चूरन मिलाकर हाथीके अङ्गमें लगादे तो मतवाला हाथीभी वशमें हो-जायगा।

(च) हस्तनक्षत्रमें छछूंदर मारकर उसे पीस डाले और अङ्गमें लगानेसे हाथीभी भाग जायगा।

स्त्री वश करनेके भी कुछ उपाय लिखे जाते हैं।

(क) चिताकी राख, चरबी, कुरैया, तगर, केशर इन सबको बराबर लेकर पीस डालै, यह चूर्ण स्त्रीके मस्तकपर और पुरुषके पावपर लगानेसे वह स्त्री और पुरुष जन्मभरके लिये दास होजाते हैं।

(ख) तीस चने, सोलह इन्द्रजौं, गायका दांत, मनुष्यका दांत तेलके साथ पीसकर माथेपर तिलक करे सबही स्त्री वशमें हो जायगी।

(ग) अश्विनीनक्षत्रमें ढाकके पेडकी जड़ लावै हरेक स्त्री इससे वश हो सकती है।

आकर्षणके भी अनेक उपाय हैं।

(क) आश्लेषानक्षत्रमें अर्जुनवृक्षकी जड लाकर बकरी के मूत्रमें पीसे। यह दवाई किसी स्त्रीके माथेपर लगा दे तो तत्काल उस स्त्रीका आकर्षण हो जायगा।

(ख) जोंक और केओटि सांप मारकर सुखावै और पीस डालै। फिर जँबीरी निबूकी लकडी झोंजलायकर धूप देनेसे आकर्षण होजाता है।

(ग) जिसको आकर्षण करना हो उसके पांवतलेकी मट्टी, कृकलासका रुधिर इन दोनोंको मिलाकर एक मूर्ति बनावै। फिर इस मूर्तिकी छातीमें कृकलासके रुधिरसे जिसको आकर्षण करना हो उसका नाम लिखे। फिर उस मूर्त्तिको नालीमें रखकर उसके ऊपर पेशाब करें। इस क्रियाके करने से अगर स्त्री ४०० कोस दूर होगी तो वह भी वशमें आजायगी और चली आवेगी। इस क्रियाके साधनेको नीचे लिखा हुआ मंत्र चार लाख जपना चाहिये।

"ॐ घुं घुं ता आकृष्टिकर्त्ता सृष्टि पुरी अमुकीं वरो ह्रीं ह्रीं।"

स्तम्भन

इस शक्तिके प्राप्त कर लेनेसे गमन, पुरुषके वचन, अस्त्र और शत्रुसेनास्तम्भन अर्थात् शक्तिहीन और बन्द की जा सकती है।

(क) हलदी या हरतालसे भोज पत्रपर अभिलाषित पुरुषकी मूर्ति काढ पीले रङ्गके सूतसे लपेट इस मूर्त्तिको पत्थर पर बाँधकर रक्खे, ऐसा करनेसे वह पुरुष कहीं-पर भी न जा सकेगा।

(ख) चमार और धोबीकी नांदसे मैल इकट्ठा कर, चण्डालस्त्रीके हैजके कपडेसे पोटली बनावै। यह पोटली जिसके आगे फेंक दी जायगी वही उठनेकी शक्तिसे हीन हो जायगा।

(ग) जिस स्थानमें गाय, मेंढे, घोडे और हाथी बाँधते

हैं, वहांपर चारों तरफ ऊंटकी हड्डी जमीनमें दबा रखनेसे इन जानवरोंकी चाल रुक जाती है।

(घ) भोज पत्रपर केशरसे शत्रुके नामके साथ एक रास्ता बनावै। उसको नीले डोरेसे पूर रक्खे। नीचे लिखा मंत्र पढना चाहिये। इस प्रकार करनेसे शत्रुका निश्चय ही स्तम्भन हो जायगा।

मंत्र–"ॐ सहबलेशाय स्वाहा।"

(ङ) भोज पत्रपर हलदीसे चहीते आदमीकी तसबीर बनावै। पीले डोरेसे लपेटकर पीले फूलोंसे उसकी पूजा करे फिर यह डोरा दो पत्थरोंसे दाबदे। पुरुषका बोल बँध जायगा।

(च) नीचे लिखे हुए मंत्रसे सात पथरियें ग्रहण करके उनमेंसे तीन पथरियें कमरमें बाँध और चार पथरियें दोनों मुट्ठियोंमें लेवें। ऐसा करनेसे चोरकी गति रुक जायगी।

मंत्र–"ॐ नमो ब्रह्म वेसरि रक्ष रक्ष ठः ठः।"

(छ) केतकीकी जड शिरपै और नेत्रोंमें लगानेसे शत्रुओं की चाल रुक जाती है।

(ज) पुष्यनक्षत्रमें आकन्दकी जड उखाडकर उसे एक कौडीमें भरकर किसी फलके बीच रक्खे। लडाईके वक्त उस फलको मुखमें रखनेसे किसी प्रकार दुश्मनका अस्त्र अंगमें नहीं लगेगा।

(झ) मेंढककी चरबीके साथ नीमकी छाल पीसकर शरीरमें लगावै, अग्नि रुक जायगी अर्थात् उसका असर शरीर पर न होगा।

(ञ) भांगरा, केलेकी जड, मेंढककी चरबी इन तीनों को इकट्ठा कर मन्दी आंचमें पकावै। इसको लगा कर जलती हुई आगपर भी चला जा सकता है।

(ट) कृकलासका दांया हाथ त्रिलौहसे घेरकर मुंहमें रखले। इसके लिये "ॐ अन्नये उद स्वाहा" यह मंत्र पढै। इसको पढकर आदमी जलमें फिरा करे डूबेगा नहीं।

(ठ) पुष्यनक्षत्रमें सफेद चोंटलीकी जड लाकर कसूम के फूलोंके रसमें पीसे और उससे कपडेका एक टुकडा रँगै। इस कपडेको अंगमें पहरकर जब तक इच्छा हो जलमें रहै, डूबेगा नहीं।

मोहनकेभी कुछ उपाय लिखे जाते हैं।

(क) गुड, कंजुयेके बीज, काठका भुना हुआ आटा एक करे। इसकी धूनी दे तो आदमी मोहित होजाय।

(ख) दूसरी घासमें चली गई हुई जोंककी विष्ठा, अजगरकी विष्ठा इकट्ठा कर धूप देनेसे सब प्राणी मोहित हो जाते हैं।

(ग) गोखरू, सालके फल, चीता, मैनसिल, बाल, लाङ्गलिका (एक प्रकारका विष), अपामार्गकी जटा यह सब चीजें बराबर ले धूप देनेसे हरेक मनुष्य मोहित हो जायगा।

इन उपायोंसे नर नारियोंको मोहित किया जासकता है। उस समय उनको कोई ज्ञान नहीं रहता। किन्तु इन नशों के दूर करनेका भी उपाय है। गायका घी और धूप मिलाकर धूप दे, सूंघतेही मोहित पुरुष सावधान हो जायगा।

उच्चाटन

उच्चाटनके भी बहुत उपाय हैं, हम सिर्फ पांच ही लिखते हैं।

(क) अश्विनी नक्षत्रमें पीपलकी जड़ उखाडकर नीचे लिखे मन्त्रसे सात बार पढकर जिसके घरमें फेंक दी जाय उसका शीघ्र उच्चाटन होजाय ।

मन्त्र–"ॐ खं गुः खा पाखाबिना स्वाहा"

(ख) आर्द्रानक्षत्रमें नीमकी लकडीकी कील लावै । और नीचे लिखा हुआ मंत्र कीलमें सात बार पढकर शत्रुके घरमें फेंके उसका उच्चाटन हो जायगा ।

मन्त्र–"ॐ नमो भगवति कामरूपिणि स्वाहा ।"

(ग) जिस मनुष्यके दरवाजेपर चोंटलीकी जड लगादी जाय उसका उच्चाटन हो जायगा ।

(घ) मनुष्यमांस, शूकरमांस, गिद्धनीकी हड्डी, विष, गायका पैर, भैंसका पांव, उल्लूके पर इकट्ठे कर शत्रुके घरमें दाबनेसे उसका उच्चाटन होजायगा ।

उच्चाटनका इलाज भी लिखा हुआ है। आंवलेको पीसकर अङ्कोलफलके तेलमें भिगोदे। फिर उसका लेप माथे पर करके स्नान करे, दुग्ध पान करके उच्चाटन करे, दोषकी शान्ति हो जायगी ।

मारण

इस सामर्थ्यके प्राप्त करनेसे प्राणीका प्राण नाश हो सकता है।

(क) अश्विनीनक्षत्रमें बारह अङ्गुलके नापकी घोडेकी

हड्डीकी कील शत्रुके गृहमें डालनेसे शत्रुका परिवारसहित नाश हो जाता है।

मंत्र–"ॐ सुरे सुरे स्वाहा"

(ख) गधेकी हड्डी और केउटि सांपका शिर इकट्ठा करके जिसके द्वारे दाब दिया जाय उसकी निश्चय मृत्यु होवै।

(ग) शत्रुकी विष्ठा और विच्छू यह दोनों वस्तु एक गढा खोदकर दाब दे, उसके ऊपर एक ढक्कन दे दे। इससे शत्रुकी मृत्यु हो जायगी।

(घ) श्वेत अपराजिताकी जड, कुरैया, नमक, विष, खरगोश, सुअर, मोर और गोखुरा सांपका पित्त और महानीमके पत्ते इकट्ठे करके होम करे इस प्रकार सात दिन होम करनेसे निश्चयही शत्रुकी मृत्यु हो जायगी।

इस प्रकार और भी बहुत उपाय हैं उन कार्योंका प्रकाशित करना आजकलके दिनोंमें कानूनके बखिलाफ है सिर्फ नाजरीनकी खातिरदारीके लिये यह चार उपाय ऊपर लिखे।

विद्वेषण

(क) कौवे और उल्लूके पंखोंसे जिन दो जनोंके नामसे होम करा जाय उन दोनोंकी मुहब्बत टूट जाय।

(ख) किसीके घरमें काग, उल्लू, गधे और घोडे का शिर दाब देनेसे उस घरमें सदा क्लेश हुआ करता है।

(ग) चूहा, बिल्ली, ब्राह्मण, संन्यासी इन चारोंके रुये इकट्ठे करके धूप दे तो खाविन्द बीबी और बाप बेटेमें झगडा होजाय।

(घ) उल्लूकी जीभ लाकर पेठेके रसमें डुबोवै, फिर इनसे धूप दे, दो आदमियोंमें झगडा होजायगा ।

(च) ढाककी लकडीको लाकर कुल्हाडीसे काटे, फिर उसको पीसें । यह चूर्ण जिन दो आदमियोंके बीचमें डाला जायगा । उन दोनोंमें झगडा हो जायगा ।

रोग पैदा करना

ऐसी बहुत तदबीरें हैं जिनसे शत्रुके शरीरमें रोग उत्पन्न किया जा सकता है ।

(क) भिलावा, श्वेत चोंटली, मकरा इन सबको इकट्ठा पीसकर रातको जिसके अङ्गमें लगा दिया जाय उसके शरीरमें कोढ होजाय । दूधमें बूरा मिलाकर पीनेसे रोगीको आराम हो ।

(ख) अनुराधानक्षत्रमें तीन अंगुलके नापकी कुरैया वृक्षकी जड लाकर जिसके घरमें जमा दीजाय उसकी आंखें दुखने लगे । इसके लिये यह मंत्र पढै ।

मंत्र–"ॐ अन्देरह अन्देरह स्वाहा ।"

(ग) जवाखार, शत्रुके पांवकी धूल शरीरमें लगा देनेसे शत्रु गञ्जा होता है । इसका मंत्र यह है ।

मन्त्र–"ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय कम्पने धूनने मुञ्च मुञ्च दुर्गोसः ।"

(घ) घिरघटका खून, हरे सांपका खून इन दोनोंसे डोरेको रंगे । जो स्त्री इस डोरेको नांघ जायगी उसके बहुत रुधिर निकला करेगा ।

(ङ) शत्रुका चाबा हुआ पान और दँतौन लाकर सांपके मुखमें डालदे। शत्रुका मुख बन्द हो जायगा।

(च) जम्बीरी नीम्बूकी जड हस्तनक्षत्रमें उखाडकर किसी स्त्रीके शरीरमें लगादे तो उसका बदन बिगड जाय।

मन्त्र –"ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय अमुकं गृह्य गृह्य ठः ठः।"

नुकसान करना

(क) हस्तनक्षत्रमें एक अंगुलके नापकी कनेरकी लकडी लाकर मसानकी राखसे नामयुक्त मंत्र लिखकर कुम्हारके घरमें दबादे तो उसके आवेंकी कुल हांडियां फूट जायँगी।

गन्धक पीसकर जलके भरे पात्रमें डालदे। इस जलसे सींचनेसे शाक बाग सब नष्ट हो जायँ।

नामर्द करनेके भी बहुतसे उपाय हैं।

(क) जहांपर मनुष्य पेशाब करे उस स्थानमें बीछूका डंक दबादे तो वह पुरुष नामर्द हो जायगा।

(ख) जब गाय या बैल गोबर करे तब यह गोबर जमीन पर गिरनेके पहलेही हाथमें लेकर इससे उस आदमीकी मूर्त्ति बनावै जिसको नपुंसक करना हो, फिर इस मूर्ति को क्लीब करे। तब वह आदमी जिसकी मूर्त्ति बनाई जायगी तत्काल क्लीब हो जायगा।

मन्त्र–"ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय कामप्रचण्डाय हन हन चैनजेर मुखेन क्षत्रयखण्डाय स्वाहा।"

नींद कराना

(क) एक सुपारी खायकर जो बचे उसको मट्टीमें

दबादे फिर उसके ऊपर पेशाब करे। जिस मकानमें ऐसा होगा वहांपर सबको नींद आ जायगी।

(ख) कमल, मिर्च, नागकेशरकी जड इन तीनोंको एकसाथ घिसकर नेत्रोंमें आंजे। नींद शीघ्र आ जायगी।

बंधनमोचन

(क) अगहनमहीनेकी पूरनमासीको अपामार्गकी जड उखाडै। इस जडको चोटीमें बांधनेसे छुटकारा होजाता है।

(ख) जटामासी और लाल कमल बराबर लेकर एक घिरघटको खिलावै। फिर इस घिरघटकी विष्ठा इकट्ठी कर गोलियां बनावै इन गोलियोंको जिस्ममें लगातेही जञ्जीर टूट जायगी।

घरक्लेशका दूर करना

(क) तगरके साथ हरताल पीसकर इसकी एक मक्खी बनावै। उस बनी हुई मक्खीको घरके भीतर रखदे, उसकी गन्धको सूँघकर मक्खियां घरसे निकलकर भाग जायँगी।

(ख) गुड, आकन्दका दूध, चोंटली और तिलका चूर्ण इकट्ठा करके आनन्दके पत्तोंमें रखदे, सब चूहों का नाश हो जायगा।

(ग) अर्जुनके फल फूल, लाख, लाल चन्दन, गुग्गुल श्वेत अपराजिताकी जड, भिलावा, वचकी लकडी, धूनी इन सब चीजोंको इकट्ठा कर घरमें धूप दे इस धूपकी गन्धसे सांप ततैया और चूहे भाग जाते हैं।

(घ) केओटि सांपके मुँहमें जौ बोकर मट्टीमें गाड दे। जब इन बीजोंसे वृक्ष उत्पन्न होकर बाल आजाय तब इन

बीजोंको लाकर पास रक्खो। यह जौ सांपके रहनेकी जगह रखनेसे वहांपर सर्प नहीं रहता।

मछलीका जिलाना

(क) भिलावेके बीजके तेलमें ताजी मरी हुई मछली लपेटकर जलमें डालनेसे तुर्त जी जायगी।

अनेक तरहके रूप धारण करना

घिरघटकी पूँछ ग्रहण कर उसको त्रिशूलमें बींधकर मुखमें धारण कर लें, वह अनेक प्रकारके रूप धारण कर सकता है। ८००० वार मन्त्र पढकर सिद्धि होती है।

मन्त्र–"ॐ संकोचाय स्वाहा।"

पक्षियोंका मारना

घिरघटके मांसको बडके पत्तेमें लपेटकर रखले। फिर कैसेही ऊंचे परन्दकी तरफ देखा जाय, वह फौरन जमीन पर गिर पडेगा।

मृतसञ्जीवनी

इस विद्याके बलसे मुरदा जिन्दा हो सकता है। तंत्रमें बहुत तरीके इसके लिखे हैं। हम यहांपर सिर्फ तीन तरीके लिखते हैं।

(क) अंकोलवृक्षके नीचे शिवलिङ्ग स्थापित करे। उस लिङ्गके सामने एक नया घडा स्थापन करके पूजा करे। उसके पीछे वृक्ष, घडा और शिवलिङ्गको एक सूतसे बांधकर चार अनुष्ठान करनेवाले चार सप्ताहतक पूजा करें। इस प्रकार दिन रात अघोर मन्त्रसे पूजा की जाय। जबतक अंकोल वृक्षके फल पके तबतक पूजा करें। फिर इन फलोंमेंसे बीज

निकाले । इन बीजोंको बडे मुँहवाले एक बर्त्तनमें रख दे । इस बर्तनके मुखमें थोडा पिसा हुआ सुहागा डाले । फिर इस घडेका मुख कुम्हारके यहांकी मिट्टीसे भली भांति बंद करे तत्पश्चात् इस बर्त्तनका मुँह नीचे करके इसके नीचे एक तांबेका बर्तन रखदे इसमें तेल गिरेगा । इसमेंसे ४ रत्ती तेलके साथ ४ रत्ती तिलका तेल मिलाकर मुरदेके शरीरपर मले मृतक जिन्दा हो जायगा ।

(ख) पुरुषका वीर्य और पारा पहले कहे हुए तेलके साथ मिलाकर मृतक पुरुषके शरीरपर लेप करे वह पुरुष तत्काल जिन्दा हो जायगा ।

मृत्युकालज्ञान

बहुत तदबीरोंसे मृत्युके बहुत पहले भी मृत्युका समय जाना जासकता है । यह सब बातें लक्षणके ऊपर मुनहसिर हैं ।

(क) अगर कोई पुरुष उत्तर दिशाको जाते २ रास्ता भूलकर दक्षिण दिशाको चला जाय तो एक वर्षके भीतर उसकी मृत्यु होगी ।

(ख) अगर किसी पुरुषको दर्पणमें चन्द्र सूर्य और संसारमें छेद नजरमें आवें तो एकवर्षमें उसकी मृत्यु होगी ।

(ग) स्नान करतेही जिस पुरुषका हृदय सूखजाय और धुआंसा निकलना आरम्भ हो, सात महीनेके बीचमें उसकी मृत्यु होजाय ।

(घ) जो पुरुष अपनी परछाई छातीतक देखे, वह छः महीनेके बीचमें मर जायगा ।

(ङ) केवल जिसके माथे और भौंमें पसीना आवै उसकी मृत्यु एक महीनेमें होजाय।

(च) अगर किसी पुरुषके दोनों होठ और तालुआ शुष्क हो जायँ उसकी मृत्यु, जिन्दगी छः महीनेकी जानो।

आहारकी सामर्थ्य

घिरघटका होठ लाकर चोटीमें बांधै और आहार करें तो भयंकर आहार किया जाय। नीचे लिखे मंत्रसे भोजनको पढले।

मन्त्र–"नाडी बेगेन उर्वशी स्वाहा।"

बहेडापेडकी जडमें आसन बनाय उसके ऊपर बैठकर भोजन करे तो राक्षसकी समान भोजन किया जाय।

भयनिवारण

(क) सोनेके समय मुनिश्रेष्ठ आस्तिकका नाम तीन बार लेनेसे सोते हुए को फिर सर्पका भय नहीं रहता।

(ख) इतवारके दिन पुष्यनक्षत्रमें गिलोयके फल तोड कर उसकी माला गलेमें पहरे सर्पभय नहीं रहेगा।

(ग) शुभ नक्षत्रमें मरोरफलीकी जड उखाडकर जो पुरुष दाहिने हाथमें धारण करे उसको व्याघ्रभय नहीं होगा।

(घ) नीचे लिखा हुआ मन्त्र पढकर सात रत्ती जल अग्निमें डालदे अग्निभय न रहेगा।

मन्त्र – "उत्तरस्यां च दिग्भागे मारीचो नाम राक्षसः। तस्य मूत्रपुरीषाभ्यां हुतो वह्निः स्तम्भं स्वाहा।"

(ङ) इतवारके दिन सफेद कनेरकी जड उखाडकर दांये हाथमें धारण करनेसे अग्निभय निवारण हो जाता है।

गुप्तज्ञान

(क) शनिवारको आश्लेषानक्षत्रमें सन्ध्याकालके समय दाडिमीके बीज और दाडिमीका अरक और मङ्गलवारी अँधियारे पक्षकी अष्टमीको अरहरका वृक्ष और मङ्गलवारको कमलकी जड़ लाकर इकट्ठा पीस ले फिर आंखोंमें आंजनेसे समस्त गुप्त द्रव्य दिखाई देते हैं।

मृत्युचिह्न

(क) जिसकी नाकके दाहिने स्वरमें दिनरात सांस चलता रहै, उसकी मौत तीन दिनके अन्दर हो जाती है।

(ख) जिसके सांस दोनों नथनोंसे बराबर निकलते हुए दश दिनतक चलते हैं, वह केवल दो दिनतक जियेगा।

(ग) जिसका सांस नाकको छोडकर केवल मुखके द्वारा निकले वह सिर्फ एक दिनतक जीता है।

(घ) जिसकी देह अचानक कांपे, चार महीनेके भीतर ही उसकी जिन्दगी खतम होजाय।

मन्त्रविद्याके बलसे जो अजायब ताकतें पैदा होजाती हैं, उनको हमने लिखा। जब एकही उपायसे कार्य सिद्ध हो जाय तो बहुतसे तरीकोंके सीखनेकी क्या जरूरत है? लेकिन तन्त्रोंमें और भी बहुत तदबीरें लिखी हैं।

काकचरित्र

कागके देखने और उसकी बोली सुननेसे होनहारका हाल इतना ज्यादा मालूम होता है कि सामुद्रिक शास्त्र जानने वालोंने इसको एक खास इल्म ठहराया है। उन्होंने इसको "शकुनशास्त्र" नाम दिया है। इसके बहुत कुछ हालात लिखे

हैं कि एक २ कागसे इन्सानकी जिन्दगीका पूरा हाल लिखा जा चुका है। पढनेवालोंको जरूरही इस बातका इम्तहान करना चाहिये।

हम नीचे मुख्तसिरमें कौवेकी बोलीका खुलासा लिखते हैं। खुलासा करनेके पहले दो बांतोंका जानना बहुत जरूरी है। पहले तो कौवेकी अलग २ आवाजोंका जानना। कौवेकी हरेक आवाजमें जो फरक है, बिना उसके जाने नहीं मालूम हो सकता कि कौवेने क्या आवाज की। कौवेकी सब आवाजें हम नीचे लिखते हैं। और उस आवाजका नतीजाभी उसके बराबरमें लिखा गया है।

नं.	शब्द.	फल.
१	क्व–क्व	भला होना.
२	क:–क:	राजाकी नाराजगी.
३	करकं–करकं	बहुत आदमियोंके साथ मिलना.
४	केतं–केतं	रत्नका पाससे निकल जाना.
५	करको–करको	रञ्ज.
६	कौलौ–कौलौ	बेफायदा या नुक्सान होना.
७	कोयं-कोयं	राजा या मालिकका मरना.
८	केरं-केरं	अनभल या मौत.
९	कुरल्लु-कुरल्लु	खुशीका होना.
१०	क्व:कुकुं-क्व:कुकुं	मुरदेका दिखाई देना.
११	क्लेनं–क्लेनं	मित्रका पाना.
१२	कुरुतं–कुरुतं	झगडा और रञ्ज.
१३	कुयं–कुयं	पराये काममें मौत.
१४	कोच्छु-कोच्छु	तन्दुरुस्तीमें फर्क पडना.

नं.	शब्द.	फल.
१५	कै–कै	पतिव्रता स्त्रीका आना.
१६	कुलुर–कुलुर	मौत.
१७	कें कें कें	दौलत मिलना.
१८	कौं कौं कौं	चोरभय.
१९	क्री–क्री	खूबसूरत औरतका पाना.
२०	कोरं-कोरं	स्त्री और पशुका नाश.
२१	कुलं–कुलं	मौत, कैद.
२२	कोइ–कोइ	ज्ञान पाना.
२३	क्लेतं–क्लेतं	बरसना.
२४	क्रौं-क्रौं-क्रौं	मङ्गल.
२५	कैकं–कैकं	मिलना.
२६	कोरं–कोरं	धन बढना.
२७	कुरुटं–कुरुटं	निरुपद्रव, बेखौफ.
२८	कुरुणु–कुरुणु	लक्ष्मीसे मिलाप.
२९	कुल–कुल	कपडा मिलना.
३०	कैरंके–कैरंके	बन्धुसमागम.
३१	काओया-काओया	परदेशीका आना.

इसके सिवाय कौवा मौकेपर अलग २ बोलियां बोलता है, जिससे अलाहिदा २ फल होते हैं, सब बातें लिखनेसे किताब बहुत बढ़ जायगी ।

फडकना

हरेक अङ्गके फडकनेसे अलग २ नतीजेका होना हम सबही यकीन करते हैं। यद्यपि आजकल उन्नीसवीं सदीकी दरम्यानमें तालीमका रुख और तरफको होनेसे मुल्कमें बहुतसे

फेरफार होगये हैं, अगरचे आजकल हम किसी बातका यकीन नहीं करते लेकिन बदनके अजिजाका फडकना हमारे दिल और हमारी कौमके साथ इतना मिल गया है कि इसका यकीन न करके भी हम यकीन करते हैं। ज्यादातर आंखके फडकनेका तो इतना रिवाज होगया है कि छोटे २ लडके लडकी भी इसके नतीजेको जानते हैं और जानकर खुशी व रजीदगी हासिल किया करते हैं।

सामुद्रिकमें तो इन बातोंका बहुत बयान है लेकिन यहाँपर हम खास २ बातें लिखेंगे। किस अङ्गका क्या फल होता है, सो हम नीचे लिखते हैं। एक तरफ अङ्गका नाम दूसरी तरफ उसका फल लिखा है।

नं.	प्रत्यङ्ग.	फल.
१	मस्तक	राजा या राजसन्मान.
२	केश	केशका क्षय.
३	ललाट	सुखभोग.
४	भौं	प्रियजनसे मिलाप.
५	दाई आंख	धन पाना या मित्रका दर्शन.
६	दाई आंखके नीचेका हिस्सा	तकलीफ और रंज.
७	वाई आंखके ऊपरका हिस्सा	दौलत पाना.
८	वांई आंख	दौलतकानुकसान रंज राजासे डर.
९	बंद आंख	सुख पाना.
१०	नीचेका अंग	औरतका मिलना.

नं.	प्रत्यङ्ग.	फल.
११	दोनों नेत्र	पीडा और रोग.
१२	आंखके बीचका हिस्सा	घबडाहट और मौत.
१३	नाक	मौत या खौफनाक तकलीफ.
१४	नाकका दाया सुर	बदनमें दर्द.
१५	नाकका वायां सुर	मौतकी खबरका पाना.
१६	ऊपरका होठ	बडा खाना.
१७	नीचेका होठ	अचानक तकलीफ.
१८	जीभ	बहुत फायदे.
१९	तालुआ	रंज और फायदा
२०	दायां कान	कुटुम्ब विद्या और स्त्रीका पाना.
२१	बांया कान	शिरदर्द.
२२	दोनों कान	धन संतोष पाना.
२३	कनपटी	प्यारेकी खबर पाना
२४	दाहिना कंधा	सुवर्ण पाना.
२५	बायां कंधा	थोडासा फायदा होना.
२६	दोनों कंधे	शिर कटना.
२७	नस	कपडा और संतोष मिलना.
२८	कंठ	बुखार और दस्त.
२९	छाती	सब अंगोंमें तकलीफ और जीत होना.
३०	पीठ	शूलकी बीमारी और हार.
३१	गाल	राजदरबारका देखना.
३२	स्तन–पिस्ता	धन पाना.

नं.	प्रत्यङ्ग.	फल.
३३	बांह	बंधु पाना.
३४	कोख	प्रसन्नता.
३५	पेट	सुख और पुत्रका पाना.
३६	अस्त्र	धन पाना.
३७	घुटना	दुश्मनके साथ दोस्ती.
३८	दांया हाथ	जोर बढना.
३९	बांया हाथ	रंज.
४०	जांघ	बुरी खबरका पाना.
४१	कमर	पेटमें दर्द होना.
४२	नाभि	बुरे स्वप्नका देखना अपने स्थानका निकल जाना.
४३	चूतड	तकलीफ.
४४	गुदा	शिर कटना.
४५	पांव	सुख और दूरकी मुसाफरी.
४६	अंगुली	तीखा पदार्थ भोजन करना.

स्वप्नसिद्धि

हम पहलेही कह आये हैं कि ख्वाब देखनेसे इन्सानकी जिन्दगीका बहुतसा हाल मालूम हो सकता है। अक्सर आजकलके जमानेमें कोई २ इस बातका यकीन न भी करैंगे लेकिन जब रोजमर्रा हम उन ख्वाबकी बातोंको सच्चा होते देखते हैं तब किस तरहसे एकबारगी झूठा समझलें।

ख्वाब कितने दिनमें असर करता है? कैसा २ ख्वाब होता है? यह कुल बयान सामुद्रिकशास्त्रसे लेकर हम नीचे लिखते हैं।

रातके पहले पहरमें ख्वाब नजर आनेसे एक सालमें, दूसरे पहरमें नजर आनेसे सात माहमें, तीसरे पहरमें नजर आनेसे तीन माहमें और चौथे पहरमें या बडे तडके ख्वाब नजर आनेसे दश दिनमें नतीजा खुल जाता है। सुबहके वक्तका ख्वाब जल्दी नतीजा देता और दिनका ख्वाब ज्यादा असर रखनेवाला होता है।

इसी तरह तिथिके भेदसे भी ख्वाब जल्द या देरमें असर करता है। १। २। ३। ४ गिनतीसे पडवा, दोयज, चौथ समझना चाहिये।

तारीखके फरकसे ख्वाबका नतीजा बदलनेके सिवाय वक्तमें भी फरक पड जाता है। जैसे।

१ देरमें। २ अपना होनेसे पराया और पराया होनेसे अपना। ३ बखिलाफ। ४ दो महीनेसे लेकर दोसाल के बीच में। ५ दो महीनेसे लेकर दो सालके बीचमें। ५६ सच्चा नतीजा। ७ सच्चा नतीजा। ८ सच्चा नतीजा। ९ सच्चा नतीजा। १० सच्चा नतीजा। ११ देरमें। १२ देरमें। १३ झूठ नतीजा। १४ झूंठ नतीजा। १५ सत्य और निश्चित फल। अमावस्या मिथ्या और नुकसान।

आजकलके वैज्ञानिक लोग ख्वाबके देखे हुए को दिलका ख्याल बतलानेके सिवाय और कुछ नहीं कहते। वह लोग ख्वाबमें किसी तरह की सच्चाईका होना, या ख्वाबसे इन्सानकी जिन्दगीका कुछ ताअल्लुक होना नहीं मानते लेकिन हमने कई बार ख्वाबकी बातको सच होते देखा है। एक बार हमारा रुपया एक प्रेससे आनेवाला था, लेकिन

उसको आनेमें बहुत देर हुई, रातको ख्वाब देखा कि एक बूढा आदमी सफेद चमेलीके फूल मुझको दे रहा है, हमने खयाल किया कि आज रुपया जरूरही आजायगा। चुनांचे सुबह होतेही डांकखानेसे मनीआर्डर मेरे नाम आया।

करीब तीस पैंतिस दिन हुए होंगे कि एक रोज ख्वाबमें देखा कि एक रास्तेमें मैं अकेला चला जाता हूं। मेरे इष्ट मित्र मुझको छोड़कर कहीं चले गये हैं। जिस मार्गपर मैं चल रहा हूं वह बहुत चौडा और साफ सुथरा है। थोडी देरके बाद एक अजगरकी मुआफिक बडा भारी जीव नजर आया। जिसके खास तीन फनोंपर ब्रह्मा विष्णु महेश बैठे हुए थे। अलावा इन तीन फनोंके हजारों और भी फन मालूम होते थे कि जिनमें हजारों इनसान फँस रहे थे वह इनसान बहुत कोशिश इस अजगरके फंदेसे निकलने को करते थे, लेकिन सब बेफायदा! गरज यह है कि हजारों इनसान रोते चिल्लाते बिलबिलाते हाय २ करते चले जाते थे। मैं इसको पीछेसे आता हुआ देखकर घबडाया कि कहीं मैं इसमें न फँस जाऊं, चुनाँचे मेरा ऐसा खयाल था कि इतनेमें उस अजदहेने आकर मुझको धर दबाया। अब मेरा दायां हाथ उसने अपने फनको उठाकर फांस लिया। इस वक्त बेताबी और रंजका क्या ठिकाना था? दुनियासे अब दाना उठा हुआ समझ, चुका था, दोस्तोंसे मिलनेको खयाल जाता रहा था। लेकिन ताहम भी "मरता क्या न करता" की कहावतके मुआफिक किस्मत आजमांईके लिये जोर किये रहा था कि यकायक मेरा हाथ उसके फंनसे छूट गया

और मैं उसकी फनकी पहुँचसे करीब २० हाथ दूर जापड़ा। गिरतेही आंख खुल गई। उठकर छतपर टहलने लगा। प्रभात-काल होते ही यह स्वप्न घरवालोंके और अपने एक कृपालु वृद्धजीको जिनको हम ताऊ कहा करते हैं सुनाया। इसको सुन स्वप्नशास्त्रानभिज्ञ वृद्धजीने कहा कि तुमको प्राणान्त-कालीन पीडा होगी सो सही परंतु तुम्हारे प्राण इस वार बच जायँगे। चुनाँचे तीसरे दिन मुझको ऐसा बुखार आया कि दो दिन रात तक मैं अचेत पडा रहा। घर बाहरकी खबर न रही. बादको सुना था कि हकीम लोग कहते थे कि जरा बुखार ज्यादे और बढा कि फिर ठिकाना नहीं लगैगा? जब ऐसे २ प्रमाण आंखोंके देखे मिलते हैं तब किस तरह ख्वाबको खाम खयाली समझलें?

विलायतके पंडित सब ख्वाबोंको झूँठा नहीं समझते वैज्ञानिक लोग अब तक पूरा २ पता नहीं लगा सके कि ख्वाबके नजर आनेका क्या सबब है? लेकिन ख्वाबके बारेमें कलम सबने चलाई है। बल्कि थियोसफीवालोंने तो दो एक किताबें भी तैयार की हैं और साबित किया है कि ख्वाब बिल्कुलही झूँठ नहीं होते। हिन्दोस्थानमें पहलेसे ख्वाबके नतीजे पर यकीन होता चला आया है। आजकल अँगरेजी तालीमके गुस्सेमें पडकर कोई २ इसका यकीन करना नहीं चाहते। लेकिन हमने पहलेही कह दिया है कि ख्वाब कैसे और क्यों दिखाई देता है, यह बात जब तक जाहिर नहीं होती, तब तक ख्वाब सच है झूँठ; ख्वाबके जरिये होनहार बातकी परछांई इन्सानके दिलमें पडती है या नहीं,

यह ठीक नहीं होगा। लेकिन जब हम देखते हैं कि ख्वाबका असर बराबर होता है, जब कि हिन्दोस्थानी ज्योतिषियोंने इसको शास्त्रमें मिला दिया है, तब इस अनोखे ख्वाबके असरको हँसकर उडा देना अक्लमन्दीकी बात नहीं है।

शब्दज्ञान

तांत्रिक लोग पशु पक्षी कीडे मकोडे सब जानदारोंकी आवाज समझते हैं। किस तदबीरसे वह लोग यह ताकत प्राप्त कर लेते थे उसका जिकर हम नीचे करेंगे। इस अजीब ताकतको हासिल करनेसे सिद्ध होना चाहिये। सिद्ध होनेकी तदबीर यह है।

पहले पहल कार्तिक या फागुनके महीनेमें तीज तिथिकी महा अँधेरी रातको अकेले बेखौफ चितापर शुद्ध आसनसे बैठकर चर्च्चिका देवीका ध्यान करे। चर्च्चिकादेवीका स्वरूप यह है शुक्ल कण्ठा, भयंकर शब्द करनेवाली, भयङ्कर नेत्रवाली, युवती, द्विभुजा, ताडके पेडकी समान जांघवाली, बाल खोले हुए। ध्यानका मंत्र यह है।

"ॐ ह्लीं चर्चि चर्च्चिके कृकलासकं बोधय बोधय स्वाहा" इस मंत्रका जप हजार बार करनेसे सिद्धि होती है।

मूषिका–(चूहा) "श्रीं श्रीं मुष्यै स्वाहा" यह मंत्र रातके आखिरी हिस्सेमें हजार बार जपनेसे चूहोंका शब्द समझमें आने लगता है।

बिल्ली–पूष या सावनके महीनेमें जितेन्द्रिय साधक खीर खाकर धूप दीप नैवेद्य लाल चन्दन, लाल फूल वगैरह

सामानसे अति यत्नके साथ विकट आंखोंवाली वख्तर पहरे भयंकर बिल्लीपर सवार हुई कंकटा देवीका ध्यान करे।

मंत्र–"ॐ ह्रीं कङ्कलायै स्वाहा"

रातके समय एक सप्ताह तक मसानमें बैठकर यह मंत्र जप करे। कुल तीस हजार मंत्र जप करे। तब बिल्लीकी बोली समझमें आ जाया करेगी।

बकरा या बकरी–ऊपर कहे हुए मंत्रके नियमसे सहस्र बार जप करे। और बकरीके दूधमें श्रेष्ठ अन्न पकाकर खाय, बकरीके शब्दका ज्ञान हो जायगा।

खरगोश–खीर खायकर ऊपर कहा हुआ मंत्र छः हजार बार जप करै, खरगोशके शब्दका ज्ञान हो जायगा।

बनबिलाव–पहले कहे हुए विधानसे सारे दिन पहला कहा हुआ मंत्र जपनेसे बनबिलावका शब्द समझमें आजायगा।

वानर–ऋतुमूल वेल छूकर ऊपर कहा हुआ मंत्र दश हजार बार जपनेसे बंदरके शब्दका ज्ञान हो जायगा।

रीछ–"विपुला, भीषणवदना, आलुलायितकेशा, नङ्गी यौवनजात, पनिपयोधरा, कमलनेत्रा, हास्यवदना, खड्ग, खट्वांग, कमल और असिधारिणी। इस प्रकार देवीका ध्यान कर। खीर खाकर रातके समय देवीका नीचे लिखा हुआ मंत्र जप करे और षोडशोपचारसे देवीकी पूजा करे।

मंत्र–"ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं विशालायै स्वाहा।"

यह मंत्र सिद्ध होने पर रीछके शब्दका ज्ञान हो जायगा।

व्याघ्र –ऊपर कहे हुए विधानसे साधक मसानमें बैठकर

उपरोक्त मंत्रका जप एक ल बार करेगा तो निश्चय ही व्याघ्रका स्वर समझमें आ जायगा।

हाथी–मनही मन हाथीकी याद करके आचारनिष्ठ पुरुष अगर पहले कहे हुए मंत्रको विधि विधानसे दश हजार एक सौ (१०१००) बार जपकर दशांश होम करे तो हाथीका शब्द समझनेकी ताकत हो जायगी।

सिंह–जो पुरुष पहले कहे हुए विधानसे रजस्वलाके घर बैठकर ऊपर कहा हुआ मंत्र लाख वार जपै और बलि देकर कालीकी पूजा करे और ऋतुयुक्त कामिनीकी लाल फूलोंसे पूजा कर दश हजार बार जप करे, उसको सिंहके शब्दका ज्ञान हो जायगा।

सुअर–नीचे लिखा हुआ मंत्र ७०००० वार जप करनेसे सुअरका शब्द समझमें आ जाता है।

मंत्र–ॐ घुरु घुरु धुत् घुत् स्वाहा।

गीदड–अमावसके दिन एकही चोटमें एक गीदडको मारकर पृथ्वीपर कुशके बिछौने पर रक्खे और उसके ऊपर बैठकर देवीका ध्यान करे।

देवीका स्वरूप–चतुर्भुजा, विशालवदना, नग्ना, उन्नत-स्तना, तपाये हुए सुवर्णकी समान रंगवाली, पद्म, शंख, गदा और खड्गधारिणी आलुलायितकेशा इस प्रकारसे ध्यान करे।

मंत्र–"ॐ क्रीं ह्रीं क्रीं स्वाहा ॐ"

यह मंत्र आधी रातके समय एक लाख बार जपे। इस प्रकार करनेसे गीदडका शब्द समझमें आ जायगा।

गायके मूत्रमें जौ पकाकर रक्खे। उस दिनसे आरंभ करके तीन दिन तक सूखा पहरकर "लं लं" मंत्र लाख बार जपै और इस प्रकार ध्यान करै।

देवीका स्वरूप–नीलवर्णा, मनोरमकेशा, द्विभुजा, सर्व गहनोंसे भूषित, अनेक लक्षणवान।

देवीका ध्यान करके षोडशोपचारसे पूजा करे। जप करके सिद्धि होने पर गायके शब्दका ज्ञान हो जाता है।

काग–माथेपर कागकी पूछ धारण करके "क्रीं का का" यह मंत्र चितामें बैठकर छः हजार बार जप करे। इस साधनामें पूजा और होमकी जरूरत नहीं है। आधी रातके समय केवल जप करे। इस प्रकार सिद्ध होने पर सब प्रकारके कागोंका शब्द समझमें आजायगा।

चटका–नीचे लिखा मंत्र ७००० जप करने पर कालीकी पूजाके साथ चटकाके शब्दका ज्ञान हो जाता है।

मंत्र–स्फें चाटु चाटु।

तोता–नीचे लिखा हुआ मंत्र दश हजार जप करनेसे तोतेके शब्दका ज्ञान हो सकता है।

मंत्र–ह्रीं शुक शुक बोधय बोधय स्वाहा।

कबूतर–नीचे लिखा हुआ मंत्र दश हजार जपने और शालके पेडकी जडमें बैठकर कालिकाकी पूजा करनेसे कबूतर-की बोली भली भांति समझमें आजायगी।

मंत्र–स्फें हुं हुं स्वाहा।

भूतका बुलाना

WITCH CRAFT

विलायतवालोंका भूतमें विश्वास कैसा था और अब कैसा है यह तो हम पहलेही कह आये हैं। हम यह भी पेश्तर ही कह आये हैं कि हिन्दोस्थानी दो किस्मके भूत मानते हैं, इसी तरह विलायतवाले भी जानते हैं लेकिन भारतवासी जिस प्रकार प्रेतात्मा और महादेवीके सङ्ग-रहनेवालोंको भूत समझते हैं, इङ्गलैण्डवाले वैसा नहीं समझते। इसमें तो कोई शक नहीं कि उन्होंने प्रेतात्माओंका होना माना है, और महादेवजीके भूतोंका न मानकर भी ऐसेही एक किस्मके स्वाभाविक भूतोंका होना कबूल करते हैं। अंगरेजोंके यह भूत मनुष्यके मर जाने पर उसकी प्रेतात्मासे उत्पन्न नहीं होते बरन अपने आपही पैदा होकर पृथ्वीके स्थानोंमें रहते हैं। कुछ ऐसे हैं जो आगमे रहना पसन्द करते हैं। इनको "अग्निभूत" (Tiryspirits) कहते हैं। इसी भांति कुछ भूत जलमें रहना पसंद करते हैं, इनको "जलभूत" (Watery spirit) कहते हैं। इस प्रकार पृथ्वीके अनेक स्थानोंमें अनेक प्रकारके भूत वास करते हैं, यह भूत मनुष्योंमें बहुतायतसे नहीं आते। जो जिस किस्मका भूत है, वह उसी प्रकारके एकान्त स्थानमें वास करता है, पस उन भूतोंसे इन्सानोंका कुछ नुकसान नहीं होता, लेकिन इन भूतोंमें भी बडी ताकत होती है। प्राचीन कालके वक्त विलायतमें इल्म मंत्रके जोरसे इस विद्याके

जाननेवालोंने इन भूतोंको अपने सामने बुलाकर उनसे बहुत हालात मालूम किये थे और जो लोग इस इल्मको अच्छी तरहसे जान गये थे, उन्होंने भूतोंको गुलामकी मुआफिक बनाकर उनसे अजीबोगरीब काम कराते थे। पहले विलायत-में इस इल्मका ज्यादे रिवाज था. इस इल्मको भूतका बुलाना या उइच क्राफ्ट (Witch Craft) कहते हैं। इस समय इस इल्मका करना बखिलाफ कानून है। जो इस तरह भूतको बुलाते हैं या बुलानेकी कोशिश करते हैं उनको उम्र कैदकी सजा मिलती है। इस कारण यह विद्या आज कल विलायतसे तो गायबही हो गई है।

इस विद्याके बलसे जिस प्रकार भूतोंको बुला लिया जा सकता है, वैसेही प्रेतात्माओंको सामने बुलाकर उनसे भूत भविष्यत् वर्त्तमानके बहुतसे हालात मालूम किये जा सकते थे, बल्कि उनको गुलामकी मुआफिक बनाकर अपना हरेक काम निकाल लेते थे। यह काम किस तौर तरीकेसे होते थे इस बातको कोई आलिम किताबमें दर्ज नहीं कर गया है, उन सबने जहां तक हो सका, इस बातकी कोशिश की कि यह तौर तरीके पोशीदाही रहें। पस उन आलम-लोगोंकी मौतके साथ २ ही यह इल्म भी एक तरहसे गायब हो गये, ताहम भी जहां तक हमसे होसका वहां तक तलाश करके इस किताबमें लिखा।

इन भूतोंके सिवाय विलायतवाले एक तीसरी किस्म-के भूत और भी मानते हैं। कृश्चियन धर्मशास्त्रके मूलमें

इनका रिश्ता होनेपर आदमी इनका बहुतही यकीन करते थे। लेकिन मालूम नहीं कि अब भी यूरोपवाले इन भूतोंमें कहां तक मानते हैं। भूतविद्याके जाननेवाले इस किस्मके भूतोंसे अजीबोगरीब काम कराते, पस यह भी उइचक्राफ्टके एक हिस्सेके सिवाय और कुछ भी नहीं है। यह भूत किस तरहसे इन्सानके ताबअ होते, उनके वसीलेसे क्या २ अजीब काम किये जा सकते, इन बातोंके जाननेसे पहले इन भूतोंकी तवारीखका जानना बहुत जरूरी है, क्यों कि बिना इसके जाने इन भूतोंसे कौन २ काम होते थे, जानना मुशकिल है।

यह ठीक भूत नहीं है एक तरह के "आत्माजीव" (Spiritual Beings) हैं, अर्थात् इनका शरीर जड पदार्थोंसे गठा हुआ नहीं है,, इनमें बेहद ताकत है, करीब २ खुदाई कुल ताकत इनमें हैं। तो भी दुनियामें यह गुनाहके बादशाह हैं। दुनियामें जितने गुनाह होते हैं, यह भूत इन्सानी नजरसे गायब रहकर आदमजातको गुनाह करनेके लिये लालच देकर ले जाते हैं। पेश्तर यह जीव ऐसे नहीं थे. पेश्तर यह परमेश्वरकी खिदमतमें रहकर देवदूतका कार्य करते थे लेकिन किसी समय ईश्वरने अपने पुत्रको इन देवदूतोंके सामने अपने सिंहासनपर बिठलाया और उन देवदूतोंसे कहा कि तुम सब घुटनोंके बल बैठकर मेरे पुत्रको अपना अफसर जानो। यहां पर ईश्वरके पुत्रका भी कुछ हाल बता देना जरूर है। कृश्चियन धर्मशास्त्रके अनुसार ईश्वरके

खास तीन हिस्से हैं। यथा पिता (Fasher) पुत्र (Son) और पवित्र आत्मा (Holy spirit) इन तीनोंमें वह एक और एकमेंही वह यह तीन हैं। हिन्दूधर्ममें भी पूर्ण-ब्रह्मके सत, रज, तम तीन गुण कहे गये हैं। जो कुछभी हो बाइबल कहती है कि एक समय ईश्वरने बेटेको अपने सिंहासनपर बैठाया. सब देवदूतोंमें बडी खुशीके साथ ईश्वरके पुत्रको अपना मालिक समझा। सिर्फ एकने ऐसा होना नामंजूर किया, इसका नाम सेतान (Satan) वा सयतान है। यह देवदूत, देवदूतोंके बीचमें प्रधान देवदूत था। इसकी ताकत परमेश्वरकी मुआफिक बेहद्द थी। उसने अकेलेही ईश्वरसे बगावत नहीं की बल्कि उसने करोड़ों देवदूतोंको साथ ले परमेश्वरके सिंहासन छीननेका सामान किया। दोनों तरफसे सख्त लडाई हुई। आखिरको सयतान हारकर खेत छोड़ भागा। वह मये फौजके आगमें डाला गया, अमर न होता तो जरूर ही परमेश्वरके कोपसे भस्म हो-जाता। लेकिन मरा नहीं कुछ दिन बेहोश रहकर नरकमें पडा रहा। आखिरकार होशमें आकर सयतान उस नरक-मेंही एक बडा भारी शहर बसाकर वहां पर बादशाही करने लगा। ईश्वर जब नई २ सृष्टि करता यह वहां जाकर उन नये जीवोंको गुनाहके वसीलेसे पापमें डुबा, ईश्वरके बर्खिलाफ खडा करा अपने राजमें लाकर बसाने लगा। इन जीवोंने या भूतोंने, या सयतानके मददगारोंने हमारी जमीन पर आकर सबसे पहले आदमजातको पापमें डुबाया।

तबसे आज तक हमेशाही आदमीके पास आकर वह पाप कराया करते हैं।

विलायतके भूतवेत्ता कहते हैं कि सयतान या डेविल (Satan वा Devil) आदमीके साथ कडेमें बंद होता है। अर्थात् अगर तुम अपनी आत्माको सयतानके हाथमें सोंप दो, अर्थात् अगर तुम सयतानके राज्य नरकमें जाकर बसना मंजूर करो तो सयतान कई सालतक तुम्हारा गुलाम होकर तुम्हारे वास्ते अद्भुत कार्य किया करेगा। बरन संसारमें तुम अजायब २ काम कर सकोगे। विलायतके अनेक ग्रंथकारोंने इस प्रकार सयतानके पास आदमीके आत्मा बेचनेकी नजीर लिखी है। किसी २ ग्रंथकारने तो यहां तक सफाईके साथ यह नजीर लिखी है और जिन्होंने आत्मा बेची थी, उनके बडे २ कामोंका करना, बादको अचानक उनके गायब होनेकी नजीर लिखी है, कि उनको पढकर जरूरही यकीन हो जाता है। जो कुछ हो भूतविद्याके जानने-वाले मंत्रके जोरसे सयतानको या उसके किसी नौकर को सामने बुलाकर उनकी बातोंको जानते और उनसे अपने बहुतेरे काम करालिया करते थे। लेकिन सयतानके पास आत्माके बेचनेसे जितने दिन तक सयतान उनका गुलाम होना मंजूर करता, उतने दिन जैसे अजीबगरीब काम वह लोग किया करते थे, वैसे काम और किसी तदबीरसे नहीं किये जासकते थे।

हम ऊपर विलायती तीन किस्मके भूतोंका जिकर

कर आये हैं, अब आगे यह लिखते हैं। इन भूतोंके बुलानेसे इनके वसीलेसे कौन २ काम हो सकता है।

जिस तरह हमारे देशमें कवचका रिवाज था और अब भी है, यूरोपमें भी ठीक वैसाही कवचका रिवाज था। इन तमाम कवचोंके पहरनेसे भूत प्रेत वगैरह किसीकी शरीरमें नहीं घुम सकते थे। खास २ भूत प्रेतोंके लिये खास २ कवच हैं। पढनेवालोंने हमारे दद्धाके कवच देखे ही होंगे।

इति श्रीनजीबाबादनिवासी पण्डितकुन्दनलालात्मज पं. गौरीशङ्कर शर्म्मा कृत
अघोरी तंत्र समाप्त।

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

